मासिक

अरफात किरण

रायबरेली

पत्रकारों से

"ज़बान और क़लम की ताक़त अल्लाह तआला की बड़ी नेमत है। वो इन कामों में ख़र्च करे जिनसे अल्लाह की मख़लूक़ को फ़ाएदा पहुंचे, जिनसे सच्चाई उभरे, और झूठ नीचे हो, जिनसे नेकी परवान चढ़े और बुराई पीछे हो, जिनसे अच्छाई फैले और बुराई दबे, जिनसे देश वासियों में एकता हो, इन्सानी भाईचारा और अमन व शांति पैदा हो, लड़ाई का चर्चा बन्द किया जाए, लोगों के दिलों से इन्सानों से नफ़रत का जज़्बा मिटे और इसकी जगह बुराई से नफ़रत और बुरों से हमदर्दी की जाए, और उनके साथ हमदर्दी यही है कि उनको बुराई की बुराई बतायी जाए और समझाई जाए, और जिस तरह बीमारों को नहीं बल्कि बीमारी को हम नापसन्द करते हैं और बीमारों से हमदर्दी करते हैं, और उनकी ख़िदमत और तीमारदारी करते हैं।"

अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

JAN 12

₹10/-

ईमान वालों में

अश्लीलता व अल्लाह के इनकार का रिवाज

(अनुवादः जो लोग इस बात को पसंद करते हैं कि मोमिनों में बेहयाई फैले, उनको दुनिया और आख़िरत में दुख देने वाला अज़ाब होगा। और खुदा जानता है और तुम नहीं जानते)

ये आयत एक चमत्कार है। जिस समय ये आयत नाज़िल हुई थी। मदीना मुनव्वरा के संकुचित समाज में एक विशेष बात हुई थी। इस बात का लोग अपनी महफ़िलों में चर्चा करने लगे। मजलिसें कितनी बड़ीं थीं, वो वाक़्या कितना बड़ा था, किन लोगों से इनका संबंध था, ये सारी चीज़ें ऐसी थीं कि कुरआन मजीद की इस आयत की वृहद्ता इससे अधिक थी। वो युगों से बढ़कर और इतिहासों और भूगोलों के फ़ासलों से आगे बढ़कर कुछ और चाहती थी। आज हम इस आयत की व्याख्या देख रहे हैं। "जो लोग ये चाहते हैं कि ईमानवालों में अश्लीलता और अल्लाह के इनकार का रिवाज हो, इसका विचार आज मीडिया, टेलीविज़न, रेडियो के इस दौर मे, नाविलों के इस दौर में, पिक्चर और फ़िल्म की उन्नति के इस दौर में और लिट्रेचर और सिद्धान्तों के इस दौर में इसकी जैसी व्याख्या नहीं, बल्कि तस्वीर देखी जा सकती है, किसी और ज़माने में मुश्किल है। मदीना के इस माहौल में लोगों ने ग़ैब पर ईमान से काम लिया होगा और उन्होने इसको स्वीकार किया होगा। किसी ख़ास वाक़्ये पर, लेकिन आज की दुनिया की सारी ताक़तें जिस तरह बेहयाई पर लगी हुई हैं इसका इससे पहले क्या अन्दाज़ा हो सकता था।

हमारे समाज में बिगाड़ पैदा करने वाली ताक़तें जिस प्रकार व्यवहारिक रोग और प्रकृति से विद्रोह फैला रहीं है उनके पास वो साधन हैं जो रात को दिन और दिन को रात साबित कर सकते हैं। नूर को जुल्मत और जुल्मत को नूर बना सकते हैं।"

दुनिया की राजनीति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संस्थांए सब का हाल यही है। यूरोप, अमरीका और रूस के शासनों को देखिये, इसी के साथ पश्चिमी हुकूमतों को भी देखिये कि बुरे ख़्याल व ख़राब उद्देश्यों वाले, जिनके उद्देश्य फूट डालने वाले, जिनके जीवन बुरे, जिनके व्यवहार ख़राब, जिनके काम व सोच बुरी, इन सब ने एक सामूहिक व्यवस्था बना ली है और वो सामूहिक व्यवस्था क़ौमों के भाग्य का फ़ैसला कर रहा है। इस समय स्थिति ये है कि इस गिरोह का जादू चल रहा है जिसके हाथ में मीडिया के साधन हैं जिनकी तारीफ़ कुरआन ने इन शब्दों में की है।﴿ إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَن تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا ﴾ "जो लोग ये चाहते हैं कि ईमानवालों में अश्लीलता और अल्लाह के इनकार का रिवाज हो"

हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह०)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक: १ जनवरी २०१२ वर्ष: ४

संरक्षक

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अध्यक्ष – दारे अरफ़ात

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

जनरल सेकेरेट्ररी– दारे अरफ़ात

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी

महमूद हसन हसनी नदवी

मो० हसन नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

प्रति अंक–10रू वार्षिक–100रू०

सम्मानीय सदस्यता–500रू० वार्षिक

www.abulhasanalinadwi.org

FAX-0535-2211188

E-Mail: markazulimam@gmail.com

इस अंक में:

मिस्र के चुनाव : आशांए एंव शंकांए

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी.....2

अपनी औलाद की फ़िक्र कीजिए

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी (रह०).....3

इन्सानियत की ईद

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी.....5

सूरह बक़रह

मौलाना मुहम्मदुल हसनी (रह०).....7

मीडिया और इस्लाम की दावत

मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी.....8

पश्चिमी सभ्यता एक निरीक्षण

अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी.....10

मुसलमानों का खून बहाना जाएज़ नहीं.....13

आपके दीनी सवालात और उनके जवाबात.....14

आप वोट किसको दें! इस्लामी दृष्टिकोण से

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी.....15

मुहम्मद स०अ० की जीवनी सम्पूर्ण व अतुलनीय उदाहरण क्यों

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी 16

दारे अरफ़ात की दो ज़िम्मेदार शख़्सियतों का हादसा–ए–वफ़ात

.....20

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

मिस्र के चुनाव

आशाएं एंव शंकाएं

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ये बात खुशी की है कि मिस्र मे लम्बे अत्याचार के बाद लोकतंत्र की राहें आसान हुईं हैं। लेकिन दूसरी ओर ख़तरों के बादल भी मंडराते दिखाई दे रहे हैं। वहां के हालिया चुनावों ने पश्चिमी देशो को चौंका दिया है। इस्लामी ज़हन रखने वालों के बहुमत ने पश्चिम को बेचैन कर दिया है, और उनकी ओर से इस लोकत्रन्त पर एक सवालिया निशान डाल कर इसको दाग़दार करने की कोशिशें शुरू कर दी गयी हैं। जिस लोकतन्त्र की दुहाई देते–देते उनकी ज़बानें नहीं थकती थीं, आज वही लोकतन्त्र उनके गले का कांटा बन रहा है।

स्वतन्त्रता, लोकतन्त्र जैसे कर्णप्रिय शब्द यूरोप के शब्दकोष में कुछ दूसरे ही अर्थ रखते हैं। अगर कोई निर्वस्त्र रहना चाहता है उसको कपड़े पहनने पर मजबूर करना उसकी आज़ादी के ख़िलाफ़ है लेकिन अगर कोई कपड़े पहनना चाहता है तो उसको अपने पसन्द के कपड़े पहनने की इजाज़त नहीं। यूरोप व अमरीका की दोगुली पालिसी हर जगह नुमायां नज़र आती हैं।

लोकतन्त्र के ध्वजवाहकों ने इसका अर्थ यही निश्चित किया है कि वो लोकतन्त्र पश्चिमी के अधीन हो। वो सोचने का तरीक़ा, शिक्षा की व्यवस्था, जीवन बिताने की व्यवस्था किसी देश के लिये मुनासिब हो या न हो और वो लिबास किसी को रास आये न आये लेकिन लोकतन्त्र इसके बग़ैर पनप नहीं सकता। ये साम्राजीय व्यवस्था आज लोकतन्त्र के नाम पर हर देश में थोपी जा रही है।

हुस्नी मुबारक तक चूसा जा सका चूसा गया, अब इसको एक कीड़े की तरह निकाल बाहर दिया गया। अब यूरोप को नये हुस्नी मुबारक की तलाश है जो यूरोप व अमरीका के लिये काम करे।

मिस्र के हालिया चुनाव से यूरोप को यही बेचैनी है। लाभ की कुर्सी पर अपना आदमी नज़र नहीं आ रहा है और इससे उनके अपने उद्देश्य पूरे होते नज़र नहीं आ रहे हैं। इसलिये उनको चुनाव और लोकतन्त्र का ये रास्ता खोटा नज़र आ रहा है।

इस्लाम और पश्चिम की कशमकश का इतिहास बहुत लम्बा है। यूरोप का सबसे बड़ा दुश्मन इस्लाम है। दूसरे सभी धर्म यूरोप के आगे सर झुका चुके, उन्होने अपने–अपने धर्मों को इबादतघरों में समेट लिया है लेकिन इस्लाम वो अकेला धर्म है जो इबादत के घर में भी है और बाज़ार में भी, जिसका इज़हार मस्जिद की मीनारों से भी होता है, और शासन पर भी वो अपना जलवा बिखेरना चाहता है। जिन्दगी के किसी हिस्से में वो पीछे नहीं रहता और हर जगह वो अपने दुश्मन से मुक़ाबले के लिये तैयार रहता है। किसी क्षण भी वो पीछे नहीं हटता। आज़ादी का सही अर्थ इस्लाम ही निश्चित करता है। लोकतन्त्र की वास्तविकता भी यहीं से साफ़ होती है। यक़ीनन इस्लाम का यही अधिपत्य यूरोप की निगाहों में ठिठकता है। अलफ्राइड के बेहयाई के नज़रियों ने यूरोप को जानवरों की जीवन व्यवस्था में लिप्त कर दिया। इस्लाम जब इन्सानी अख़लाक़ की दावत देता है तो निष्क्रिय मस्तिष्कों में ये वास्तविकता नहीं उतर पाती और वो बजाए इस पर ठंडे दिल से ग़ौर करने के इसे अपना दुश्मन समझ लेते हैं। जैसे एक छोटे कम अक़्ल बच्चे को आग का अंगारा पकड़ने से रोका जाए तो वो बेचारा अपना नुक़सान नहीं समझता और विरोध करता है। वही स्थिति आज दुनिया के अक़्लमंदो और विद्धानों की है। वो पूरी दुनिया को विनाश के रास्ते पर डाल चुके हैं और जब उनसे नजात की बात की जाती है तो वो विरोध करते हैं और सुधारकों को विभिन्न नाम देकर दुनिया की आंखों पर भी पर्दा डालने की कोशिश करते हैं। हर देश में ये कशमकश जारी है। भलाई के चाहने वालों और दुनिया को ख़ैर के रास्ते पर डालने वालों की भी बड़ी ज़िम्मेदारी है, वो आवश्यकता को भी देखें और शासन का भी ख़्याल रखें, मिस्र के शासकों की भी ये ज़िम्मेदारी है कि वो वास्तविकता से पर्दा उठांए और ऐसा नमूना पेश करें जिससे लोग चैन की सांस ले सकें और उनको सही और कामयाब रास्ता मिल सके।

अपनी औलाद की फ़िक्र कीजिए !

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी (रह0)

अगर आप किसी औरत को देखें कि वो अपने कपड़ों और ज़ेवरों की सफ़ाई का ख़्याल नहीं रखती। ज़ेवर का शौक़ तो बहुत है मगर बहुत गन्दा, रंग उड़ा हुआ, टूटा फूटा, ख़ानों और दराज़ों में मैल जमा हुआ, कपड़े बहुत गन्दे, बेढ़ंगे सिले हुए, लावबाली पन से पहने महफ़िलो और मजलिसों में जाती है, तो आप ऐसी औरत के संबंध में कोई अच्छी राय क़ायम नहीं करेंगे बल्कि उसको फूहड़ और उजड्ड कहेंगे और कोई औरत चाहे वो कितनी ग़रीब ही क्यों न हो, इस तरह से ज़िन्दगी गुज़ारना पसन्द नहीं करती है। हर औरत का हाल ये है कि वो अपने कपड़ों और ज़ेवरों का बहुत ख़्याल रखती है और इसलिये रखती है कि दूसरी औरतों में उसकी हंसी न उड़ाई जाए। समाज में इसको सम्मान की दृष्टि से देखा जाए। जहां वो जाऐ दूसरी औरतों में इसको जगह दें, उसकी ओर आकर्षित हो, उससे बात करें, इसको फूहड़ और उजड्ड न कहें, इसलिये हर औरत अपने कपड़ों और ज़ेवर को संभाल संभाल कर रखती है। उनकी सफ़ाई सुथराई का ख़्याल रखती है। किसी ग़लत जगह उनको नहीं रखती कि बेकार हो जांए। किसी दूसरे को देते हुए हिचकिचाती है कि ग़लत तरीक़े से इस्तेमाल करने से टूट–फूट या फट न जांए। उनकी सुरक्षा पर अपना मूल्यवान समय व श्रम ख़र्च करती है। और ये मामला केवल कपड़ों या ज़ेवर के साथ नहीं होता बल्कि अपनी हर अज़ीज़ व क़ीमती चीज़ के साथ ऐसा ही मामला करती है। अब अगर कोई दूसरी औरत इसके कपड़े मांगे और पहन–पहन कर फाड़ दे, उससे ज़ेवर मांगे और तोड़ दे, उससे रुपया क़र्ज़ ले और वापस न करे, उसके कपड़ों या ज़ेवर को गंदा करे तो उस औरत को कितना गुस्सा आयेगा, वो आपे से बाहर हो जाएगी, बुरा भला कहेगी, और जी जान से बेज़ार हो जाएगी।

लेकिन कितने अफ़सोस की बात है कि हर औरत अपनी ऐसी चीज़ों की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देती है जो टूटने फूटने वाली हैं जिनके ख़राब होने के बाद वैसी ही या उससे बेहतर चीज़ें मिलती हैं, कपड़े फटते और बनते हैं, जेवर टूटता और बनता है, माल खोता और मिलता है, लेकिन एक ऐसा ज़ेवर भी है जिसके ख़राब होने के बाद दूसरा मिलना मुश्किल है। जिसके बिगड़ जाने के बाद उसका सुधरना आसान नहीं। एक ऐसा हार भी है जो किसी एक महफ़िल के लिये ज़ीनत या ज़िल्लत की वजह नहीं होता बल्कि सारी ज़िन्दगी या वो ज़ीनत की वजह होता है या ज़िल्लत की। वो ज़ेवर औलाद है। मासूम बच्चे और बच्चियां हैं, खिलती हुई कलियां हैं, जो सच्चे मोती और सोने के तार में जिनको सही तौर से टांकनें, उनकी हिफ़ाज़त करने और संभाल–संभाल कर रखने ही से सुघड़पन व सलीक़ामंदी का पता चलता है। और निगाहों में इज़्ज़त पैदा होती है। हर मजलिस में सर आंखों पर बिठाया जाता है। वो अस्ल ज़ेवर केवल जिस्म पर पहुंच कर खूबसूरत नहीं लगता बल्कि वो जहां जाता है उस पर जिसकी निगाह पड़ती है वो उसकी तारीफ़ करता है जिसके सलीक़े और हुनरमंदी से ये ज़ेवर साफ़ सुथरा रहा।

मगर इस अस्ल ज़ेवर की तरफ़ किसी औरत की नज़र नहीं जाती। इसकी शिक्षा व प्रशिक्षण, इसके व्यवहार की पवित्रता, इसके कैरेक्टर की मज़बूती की ओर कोई ध्यान नहीं होता। अगर कोई कपड़े या ज़ेवर की बुराई करे तो आपे से बाहर हो जाती है। दिल में न बुझने वाली आग लग जाती है लेकिन अगर औलाद के व्यवहार की कोई बुराई करे तो जूं तक नहीं रेंगती। जिस्म का ज़ेवर एक दिन के लिये किसी दूसरी जगह भेजना या किसी ग़लत हाथ में देना गवारा नहीं होता लेकिन ये सारे जीवन की पूंजी और सबसे क़ीमती हसीन ज़ेवर औलाद दिन भर आवारा फिरे, ग़लत संगत में समय

बिताये, ग़लत हाथों में जा पड़े तो किसी को दुख नहीं होता न चिन्ता होती है।

जिस्म के कपड़ों में अगर कोई ख़रोंच लग जाए या बख़िया उधड़ जाए, ज़ेवर को कोई बारीक से बारीक हिस्सा टूट जाए, इस पर मैल जम जाए तो सारे काम छोड़कर उनकी सफ़ाई की चिन्ता होती है, लेकिन औलाद में बड़ी से बड़ी ख़राबी आ जाए, उसके अख़लाक़ बिगड़ जांए, उसका दीन ख़राब हो, उसकी ज़बान गंदी हो जाए तो इंसाफ़ से बताइये कि मां–बाप को कितनी चिन्ता होती है। वो उनको सुधारने के लिये कितना वक़्त लगाते हैं। एक ऐसे हार के लिये बड़े से बड़ा एहतिमाम होता है जो केवल एक मजलिस या महफिल में गले का हार बन कर रह जाता है। मगर औलाद जो सारी ज़िन्दगी के लिये गले का हार होती है उसको खूबसूरत बनाने की किसी मां या बहन को चिन्ता होती है। क्या ये फ़िक्र के लायक़ नहीं? क्या इसके लिये अपना कीमती वक़्त लगाना ज़रूरी नहीं? क्या इसके लिये माल व दौलत ख़र्च करना ध्यान देने योग्य नहीं? और क्या इसके लिये कोई इनकार कर सकता है कि ज़िन्दगी की ये पूंजी और क़ीमती ज़ेवर आज किस तरह दर बदर की ठोकरें खा रहा है। सड़को पर आवारा फिर रहा है। ग़लत ओर बेहूदा संगत की नज़र हो रहा है, ज़लील और नफ़रत के क़ाबिल सोहबतों और गन्दे माहौल में समय बिता रहा है, जिसका नतीजा सिवाय तबाही और बर्बादी के और कुछ नहीं।

जिस देश में हम रहते हैं और बसते हैं। यहां के हालात तेज़ी के साथ हमारे बच्चों के लिये ख़तरनाक बनते जा रहे हैं। अगर हम स्वंय उधर ध्यान न देंगे और अपनी सारी ताक़त औलाद की पढ़ाई और तरबियत पर न लगांएगे तो दीन से फिर जाने और अल्लाह का इन्कार करने फ़ितना हमारी नस्लों को तबाह कर देगा। जिसके आसार शुरू हो चुके हैं। ये वो नाजुक वक़्त है जबकि हम ग़फ़लत और सुस्ती का लबादा उतार कर और अपनी ज़ाती फ़िक्र को छोड़कर नस्लों की हिफ़ाज़त के लिये काम करें। हमको किसी दूसरी क़ौम से शिकवा व शिकायत करने का हक़ नहीं, न किसी से भीख़ मांगने की ज़रूरत है। एक ज़िन्दा क़ौम नाजुक से नाजुक हालात में भी हौसले और इरादे को हाथ जाने नहीं देती।

माओं पर इसके लिये ज़्यादा ज़िम्मेदारी है कि अब से पहले उन्ही के प्रशिक्षण ने मुसलमानों के बच्चों को क़ौम का निगेहबां बनाया और उन्ही से तरबियत पाये बच्चों ने दुनिया को सभ्यता व तहज़ीब सिखाई। दरिन्दों से इन्सान बनाया। क्या आज वो अपने इस काम को दोहरा नहीं सकतीं, ये हक़ीक़त है कि जो किसी चीज़ के पाने के लिये मेहनत करता है और तक़लीफ़ें उठाता है वही उस चीज़ के महत्व को पहचानता है और उसे दिल व जान से प्यारा रखता है। मांए जिस तरह अपनी औलाद के लिये मेहनत करती हैं और उसकी परवरिश करती हैं और उसकी परवरिश में खून पसीना एक करती हैं। वही उसके सही महत्व का अन्दाज़ा कर सकती हैं।

आपको आपका ज़ेवर प्यारा है, लेकिन उससे ज़्यादा औलाद प्यारी होनी चाहिये, आप अपने कपड़ों और ज़ेवर की हर वक़्त हिफ़ाज़त करती हैं लेकिन उससे ज़्यादा औलाद की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करनी चाहिये। आप अपने जिस्म, अपने कपड़ो, अपने ज़ेवर, अपने माल को हर तरह की ख़राबी से बचाने की कोशिश करती हैं। इससे ज़्यादा अपनी औलाद को बदअख़लाक़ी, बेदीनी, आवारगी से बचाने की कोशिश करें। इसलिये कि ये चीज़ें आपके वक़्ती हुस्न की चीज़ें हैं और थोड़े दिन के लिये आपकी सलीक़ामन्दी और सुघड़पन की तारीफ़ की वजह हैं, लेकिन औलाद सारी ज़िन्दगी बल्कि ज़िन्दगी के बाद भी आपको इज़्ज़त व सम्मान दिलाने वाली है। आपने इन ज़ाहिरी चीज़ों के लिये बड़ी मेहनत नहीं कि लेकिन औलाद के लिये आपको थका देने वाली परेशानी उठानी पड़ी है। और इसके लिये जान जोखिम में डालनी पड़ी है। आपका ये ज़ाहिरी ज़ेवर, ये खूबसूरत कपड़े, ये माल व दौलत कुछ लम्हों की वाहवाही का कारण हैं लेकिन औलाद केवल तारीफ़ न कराएगी बल्कि अमन व शांति, समाप्त न होने वाला आराम व राहत, और बुढ़ापे का सहारा, दीन व दुनिया की इज्ज़त दिलाने वाली हर निगाह में इज्ज़तवाली बनाने वाली है। अब आपके एख़्तियार में है चाहे तो अपने कपड़ों और ज़ेवर में उलझ कर रह जाइये और चाहे औलाद की सही तरबियत व तालीम और देखभाल करके अस्ल ज़ेवर, सदा बना रहने वाला हुस्न, और न ख़त्म होने वाला क़रार व सुकून पा लीजिए। इन दोनों का मुकाबला कीजिए और जो आपके नज़दीक ज़्यादा अहम, ज़्यादा बेहतर और ज़्यादा सम्मानित हो, उसे अपना लीजिए।

इन्सानियत की ईद

हज़रत मौ0 सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

रबीउल अव्वल का महीना बहार का महीना है। यही वो महीना है जिससे इन्सानियत की बहार आयी। इसकी आमद इन्सान के शर्फ़ व श्रेष्ठता और इन्सानियत की इज़्ज़त व सम्मान की याद दिलाती है। हुजूर सरवर–ए–कायनात स0अ0 के आने से पहले इन्सानियत अपनी ये इज़्ज़त व अपना सम्मान खो चुकी थी। जिसे मुहम्मद स0अ0 ने दोबारा बहाल किया। इन्सानियत की गिरावट की तस्वीर इस हदीस से स्पष्ट हो जाती है कि: "अल्लाह तआला ने ज़मीन वालों पर नज़र डाली तो उनको नापसन्द किया, अरब को भी अजम को भी केवल किताब वालों मे से कुछ बचे खुचे लोगों के"

अल्लाह तआला का इन्सानियत पर फ़ज़ल व करम है कि जब इन्सानियत फ़साद और बिगाड़ की आख़िरी हद को पहुंच गयी थी, और इज्ज़त से बहुत दूर जा चुकी थी, और इन्सानियत पस्ती और ज़िल्लत की तह में जानवरों की सी ज़िन्दगी गुज़ार रही थी। और इन्सान ऐसा दरिन्दा बन चुका था कि वो दबे कुचले इन्सानों के साथ वो मामला करता था कि जो बड़े जानवर छोटे जानवरों के साथ करते हैं। अपने फ़ाएदे को हासिल करने के लिये दूसरों को कुर्बान कर देता। काम लेते समय बैल की तरह जोतता लेकिन मज़दूरी न देता। अगर देता भी तो बहुत कम जो न के बराबर होती। ज़रा सी नाराज़गी पर रेगिस्तान की नज़र कर देता। विरोधियों को जंगलों में जानवरों का चारा बनने क लिये भेज देता। इन्सान का इन्सान के साथ सुलूक इससे ख़राब और बयान न करने लायक़ हो चुका था जो एक पत्थर दिल इन्सान बेज़ुबान जानवर के साथ करता है। इससे ज़्यादा पत्थरदिली और बेरहमी की बात और क्या होगी कि शासक जो खुद को श्रेष्ठ समझते थे क़ैदियों में जिन्हे वो सज़ाए मौत के लायक़ समझते अपनी आला दावतो और ख़ाने की महफ़िलों में बुलाते और उन्हे आग की मशाल बनाकर अपने मेहमानों की दावत करते कि इसकी रोशनी में वो खाना खा सकें। उनके नज़दीक इसकी तकलीफ़ और इसके जलकर राख होने से मेहमान का स्वागत दोगुना हो जाता था, और एक अच्छी तफ़रीह हो जाती थी।

औरत की हक़ीक़त खिलौने की सी और अय्याशी के सामान की सी थी, बे चूं चरां ख़िदमत ली जाती और इसको खूब इस्तेमाल किया जाता। हया व इज्ज़त व आबरू का कोई लिहाज़ दोनो ओर न था। और ये सब कुछ उस समय था जब वो ज़िन्दा दफ़न होने से बच जाती।

माल व दौलत की प्राप्ति में हर वो तरीक़ा अपनाना सही समझा जाता था जिससे माल में बढ़ोत्तरी हो। खुशी या नाखुशी की कोई परवाह नहीं की जाती थी। सूद, रिश्वत, ग़ज़ब, डाका, चोरी, ख़यानत जिसके बस में जो होता वो करता।

दीनी व मज़हबी हालत निहायत बुरी थी। बुरे विचारों व खुराफ़ातों में लोग ज़िन्दगी बिता रहे थे। ग़लत–सलत अक़ीदे बना रखे थे। सूरज, चांद, सितारों, पेड़ पौधे, नदिया, जानवर यहां तक कि कीड़े मकोड़े की इबादत करते थे और उनका ये विश्वास था कि ये लाभ पहुंचाने और हानि पहुंचाने वाले हैं। इसलिये उनके नुक़सान से बचने के लिये उनकी इबादत ज़रूरी है। आसमानी धर्मों के मानने वाले भी हक़ से हट गये थे। नसरानियों ने एक बरहक़ माबूद को तीन हिस्सों में बांट करके उसके एख़्तियार व कुदरत बांट दिया था कि वाहिद अल्लाह को तस्लीम करने के लिये रूहुल कुद्स और उसके बेटे को भी जोड़ना आवश्यक समझा। और यहूदियों ने अपनी नस्ल के कुछ नबियों को खुदाई का दर्जा देकर अपने को अल्लाह की औलाद घोषित कर लिया। और कहने लगे, "कि हम अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं"

और अपने को आम इन्सानों से श्रेष्ठ घोषित करके दूसरे सभी इन्सानो को जानवरों की जगह रखा। और उनके दिल व दिमाग़ में ये बात रच बस गयी थी कि हमारी मौजूदगी में किसी दूसरे की इज्ज़त कोई चीज़ नहीं है। और किसी दूसरे को दुनिया से फ़ाएदा उठाने का हक़ नहीं है।

इन हालात में आख़िरी रसूल सैय्यदना मुहम्मदुर्र रसूलुल्लाह स0अ0 की आमद हुई। आप स0अ0 ने ग़लत अक़ीदों व ख़्यालातों का पुरज़ोर विरोध किया वहशियाना ज़िन्दगी की ज़बरदस्त मुख़ालिफ़त की और जुल्म व फ़साद को ख़त्म किया। और इन्सानों को उसकी पस्ती से उठाया। हक़ की आवाज़ बुलन्द की और फिर उसको लागू करने के लिये ख़ड़े हुए। कुछ ने शुरू में ही साथ दिया, कुछ ने बहुत विरोध किया, फिर उन्होने आप स0अ0 पर और आप स0अ0 के जानिसार सहाबा रज़ि0 पर जानलेवा अत्याचार किये, लेकिन आप स0अ0 ने और आप स0अ0 के सहाबा रज़ि0 ने ये सब कुछ अल्लाह के रास्ते में सहा, जमे और डटे रहे। दावत व तब्लीग़ करते रहे, कि हक़ का सर बुलन्द हो और बातिल का नीचा।

आप स0अ0 ने बिगाड़ और फ़साद को ख़त्म करने, और गुमराही को दूर करने के लिये लगातार जद्दोजहद की और इन्सानों को बताया कि वो अपने रब की किस तरह बन्दगी करें और अपने मां–बाप के साथ किस तरह बर्ताव करें, पड़ोसियों के साथ कैसे रहें, रिश्तेदारों और दोस्तों, संबंधियों के साथ किस प्रकार का बर्ताव करें। छोटों और मातहतों के साथ किस रहमदिली व मुहब्बत से पेश आयें, बड़ों व अपने ज़िम्मेदारों का कैसा लिहाज़ व ख़्याल करें, और ये तालीम दी कि इन्सानों में से कोई किसी से श्रेष्ठ नहीं है सारे इन्सान बराबर हैं, सब आदमी हैं, और आदम मिट्टी से बने हुए हैं। अरब हो या अजम, न अरबी की अजमी पर कोई फ़ज़ीलत व तरजीह है, और न गोरों की कालों पर, और न कालों की गोरों पर, हां अगर है तो केवल तक़वा (परहेज़गारी) की बुनियाद पर है। और ये बताया कि वो उच्चतम् हैं लेकिन दूसरी मख़लूक़ के साथ भी उसका मामला शफ़क़त व नर्मी व फ़ाएदा पहुंचाने का होना चाहिये। आप स0अ0 की न ख़त्म होने वाली तालीम और फ़रमान है कि "सारी मख़लूक़ की परवरिश अल्लाह करता है और अल्लाह की मख़लूक़ में अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसन्द वो है जिसका रवैया उसकी परवरिश में रहने वाली मख़लूक़ के साथ अच्छा हो।"

रसूलुल्लाह स0अ0 की जद्दोजहद लगातार लगभग आधा सदी तक जारी रही यहां तक कि मुहम्मद स0अ0 ने एक ऐसा मिसाली इन्सानी समाज दुनिया के सामने पेश कर दिया कि उसके जैसा ज़मीन पर कभी नहीं देखा गया था। इस समाज का हर व्यक्ति अक़ीदे और अमल मं अपनी मिसाल स्वंय था। ये सबसे अलग इन्सानी समाज हिदायत प्राप्त समाज था। इस समाज के लोग इन्सानी फ़ाएदे के प्रचारक थे और हर समाज को अख़लाक़ी पस्ती से साफ़ कर देने की श्रेष्ठ योग्यता रखने वाले थे।

रसूलुल्लाह स0अ0 ने इन्सानियत को इसके श्रेष्ठ स्तर पर दोबारा बिठाया। उसको उसकी इज़्ज़त की चोटी पर पहुंचाया। अमन व सलामती की डगर पर खड़ा किया। सफ़ाई व पाकीज़गी अता की। सीरत व सुलूक और अख़लाक़ व विशेषताओं में जमाल व कमाल से आरास्ता किया। और इस तरह किया कि इन्सान की ज़बान कह उठी कि इन्सानियत की सुबह का सूरज निकल आया है।

आप स0अ0 की आमद इन्सानियत के चल रहे काफ़िले के लिये रोशनी का मीनार बनी जिसकी रोशनी में इन्सानी काफ़िला चलता रहेगा और आप स0अ0 के आने से इन्सानियत को दोबारा ज़िन्दगी मिली और फिर आप स0अ0 की ख़त्म नबूवत ने इसको बाक़ी रखा। माहे बहार में आप स0अ0 की विलादत हुई और यही हिजरत का महीना भी है जिसके बाद श्रेष्ठतम् मानवीय मूल्य के अनुसार मिसाली समाज बन पाया। और इसी मुबारक महीने में आप स0अ0 ने अपना काम पूरा करके वफ़ात पायी। और मिसाली इन्सानी समाज का निर्माण हुआ। इस प्रकार ये महीना अपने साथ एक पैग़ाम रखता है। इस बहार के महीने ने पूरी दुनिया में इन्सानियत की हवा चलायी। हर साल ये हमारे सामने बहार के झोंके लेकर आता है और हमारे सामने कुछ आवश्यकतांए एंव ज़िम्मेदारियां रखता है, अरबी शायर ने बहुत खूब कहा है।

(हिदायत का सूरज निकला और अपनी रोशन किरनों से वजूदे कायनात को रोशन किया और ज़माने की ज़बान खुशी और हम्द व सना के नग़्मे गाने लगी)

सूरह बक़रह

मौलाना मुहम्मदुल हसनी (रह0)

﴿الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلاَةَ﴾

"और वो लोग जो ईमान रखतें हैं,
नमाज़ क़ायम करते हैं"

﴿وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُوْن﴾

"और जो कुछ हमने उन्हे अता किया
उसमें से ख़र्च करते हैं"

पिछली आयत में जिस सूरह बक़रा की शुरूआत हुई, ये बताया गया था कि इस किताब में कोई शक व शुब्हे की गुन्जाइश नही। दूसरी बात ये कि इसमें हिदायत है उन लोगों के लिये जो खुदा से डरते हैं। इस आयत में उन्ही लोगों की खूबी बयान की जा रही है और उन्ही खूबियों में से जो तक़वे वालों में होतीं हैं या होनी चाहिये तीन बातों का इस आयत में ज़िक्र किया गया है:

- **ग़ैब पर ईमान**
- **नमाज़ की पाबन्दी**
- **सदक़ा व ख़र्च करना**

ग़ैब पर ईमान हिदायत की बिना शक पहली शर्त है। अगर कोई सिरे से ये माने ही नहीं कि इस दुनिया में गैबी वजह काम कर रहीं हैं और बहुत सी हक़ीक़तें वो हैं जो मरने के बाद नज़र आयेंगी, और हमें जो कुछ नज़र आ रहा है उसके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं जो निगाहों से ओझल है। और ये कि खुदा पर ईमान सबसे पहले ईमान का तक़ाज़ा है। तो कुरआन से फ़ाएदा उठाने में लाज़िम परेशानियां पेश आयेगीं यही वजह है कि इस मौक़े पर सबसे पहले उस खूबी का बयान है जो हिदायत व फ़लाह के लिये सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। ये वो कुन्जी है जिसकी मदद से हिदायत के दरवाज़े बहुत आसानी से खुल सकते हैं।

उसके बाद उन लोगों की दूसरी खूबी बयान की गयी है। नमाज़ क़ायम करते हैं यानि नमाज़ का हक़ अदा करते हैं। नमाज़ की फ़िक्र में रहते हैं और समाज में इसको प्रचलित और आम करना चाहते हैं। ये सारी बातें "एक़ामत–ए–सलात" के दायरे में आती हैं। ग़ैब पर ईमान के बाद सबसे पहला हिस्सा जो इन्सान के सामने आता है वो इबादत है। और सबसे बड़ी और अफ़ज़ल इबादत जो इन्सानों के सारे समय को घेरे हुए है वो नमाज़ है। ग़ैब पर ईमान ज़रूरी है कि इन्सान अपने मालिक व ख़ालिक़ के सामने सजदे में गिर जाए और किसी वक़्त उससे ग़फ़लत न करे।

इसके बाद नम्बर आता है सदक़ा और ख़दा की राह में खर्च करने का। जिसको हदीस शरीफ़ में आफ़तों व मकरूहातों से हिफ़ाज़त व अल्लाह के ग़ज़ब को रोकने का सबसे असरदार ज़रिया बताया गया है। इन दो बुनियादी खूबियों के बाद वास्तव में एक प्रकार की सुरक्षा और उस नेमत और दौलत के बाक़ी रखने की व्यवस्था की गयी है। अब अगर कोई व्यक्ति ग़ैब पर ईमान रखता है, इबादत और नमाज़ से उसका संबंध है, अल्लाह के दिये हुए माल को ख़र्च करता है तो कुरआन मजीद की हिदायत और उसकी रोशनी से फ़ायदे में उसको ज़्यादा देर न लगेगी। ये निस्बत उस आदमी के जिसके अन्दर ये चीज़ें मौजूद नहीं, इसके आगे इस आयत में दूसरी खूबियों का ज़िक्र है इसका बयान इन्शाअल्लाह अगले अंक में किया जाएगा।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ

(सूरह क़मर: १७)

"और हमने कुरआन को समझने के लिये आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे–समझे !"

मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

मीडिया और इस्लाम की दावत

रेडियो और टीवी पर प्रोग्राम के दो प्रकार इस समय प्रचलित हैं। कुछ प्रोग्राम हैं जिनको "धार्मिक प्रोग्राम" कहते है। ये लगातार होने वाले प्राग्रामों में अलग अलग संबंध से होते हैं। और कुछ ऐसे हैं जो "धार्मिक प्रचार" कहलाते हैं। ये लगातार प्रोग्राम हैं जो दीनी विषयों से संबंधित है, इनका संबंध मुस्लिम देशों से है। यूरोप के कुछ देशों में मुसलमानों ने कुछ घन्टे प्राप्त कर लिये है जिनमें वो अपने प्रोग्राम प्रस्तुत करते हैं। ऐसा यूरोप के कई देशों में हो रहा है। इसके दो प्रकार हैं। एक प्रकार तो है कि कुछ मुस्लिम व्यापारी घन्टे ख़रीद लेते हैं या जितने घन्टे प्रयोग करते उसका मूल्य चुका देते हैं। उनकी हैसियत विज्ञापन की होती है। ये प्रोग्राम इस्लाम के प्रचार का साधन बनते हैं। इसका अनुभव यूरोप के कई क्षेत्रों में हो रहा है। रेडियो के अतिरिक्त समाचार पत्रों में भी इसका अनुभव किया जाता है। जैसे वो देश ग़ैरमुस्लिम देश है तो मुसलमान को आज्ञा है कि जितने घन्टे जिस शक्ल में भी लें उनमें अपनी मर्ज़ी के प्रोग्राम प्रस्तुत करें और वो प्रोग्राम इतने प्रभावित होते हैं कि कुछ लोग उन प्रोग्रामों के कारण मुसलमान हो रहे हैं। यही स्थिति टीवी में भी हैं। इसमें अलग–अलग चैनल हैं या सयम निश्चित हैं। इसके साथ–साथ कुछ प्राइवेट रेडियो स्टेशन हैं। जिस तरह ईसाई मशीनरीज़ के रेडियो स्टेशनज़ हैं, हरम शरीफ़ की नमाज़ों और हज के दृष्यों को देखकर कितने लोग मुसलमान हो गये तो उसको देखकर दूसरे साल कुछ देशों ने इस पर पाबन्दी लगा दी कि हज फ़िल्म नहीं दिखाई जा सकती, क्योंकि हज के दृष्य देखकर लोग मुसलमान हो रहे हैं।

सऊदी अरब में शाह फ़ैसल ने जब टीवी प्रोग्राम शुरू किया तो वहां के उलमा ने उनका विरोध किया तो उन्होने दलील में कहा कि हम अपना टीवी स्टेशन नहीं रखेंगे तो लोग दूसरे टीवी स्टेशनों के प्रोग्राम देखंगे। अपने टीवी पर कन्ट्रोल करना आसान है, दूसरों के टीवी पर कन्ट्रोल मुश्किल है। इसलिये वहां उस समय से टीवी का रिवाज हुआ। वहां टीवी पर पांच वक़्त की नमाज़ें, हज के समय में हज के दृष्य और दूसरे इस्लामी प्रोग्राम प्रस्तुत किये जाते हैं। इस बात का विश्लेषण किया गया है कि ख़बरो और चर्चों के लिये लोग टीवी देखते हैं। मगर इसके साथ विज्ञापन के रूप में या सांस्कृतिक प्रोग्रामों के रूप में व्यवहार को ख़राब करने वाले और गुमराह करने वाले, फ़िल्मे के दृष्य नज़र आते हैं। इसका इलाज केवल नेक और नियन्त्रित टीवी है।

इस समय शिक्षा का सबसे बड़ा साधन टीवी है। साइंस, तकनीक और दूसरे ज्ञान टीवी पर प्रस्तुत किये जाते हैं। इनके सारे पाठ टीवी पर आते हैं। इसी प्रकार भाषा भी टीवी पर सीखी जा सकती है। लोग कहते हैं कि रेडियो पर सुनने से भाषा जल्दी आती है लेकिन बोलते समय ज़बान की जो नक़ल व हरकत होती है वो टीवी पर देखकर ज़बान सीखने में और अधिक सहायत सिद्ध होती है। बहरहाल टीवी के फ़ायदे और नुकसान दोनों हैं और ये एक अहम मुक़दमा है। बिलाद अरबिया और दूसरे इस्लामी देशों में टीवी का दावत और इस्लाह के लिये प्रयोग प्रारम्भ हो गया है। इसी तरह इन्टरनेट का मामला है। इसमें दावत की और इस्लाह की साइट कई इस्लामी ग्रुप ने प्राप्त कर ली है और उनके अच्छे असर महसूस किये जा रहे हैं। ये इस्तिफ़ता और इफ़्ता का भी साधन हैं और इश्काल और शुबहात के इज़ाला का भी। बहुत से मदरसों और इस्लामी हल्क़ों में इससे लाभ प्राप्त किया जा रहा है।

संक्षेप में ये कि इस समय रेडियो और टीवी में कई रूप अपनाए जा रहे हैं। कुछ तो "लगातार प्रोग्राम" हैं कुछ में "धार्मिक प्रोग्राम" प्रस्तुत किये जाते हैं और कुछ में कुछ घन्टे निश्चित हैं। इनमें दीनी प्रोग्राम होते हैं। रेडियो और टीवी दोनों का यही तरीक़ा अपनाया जा रहा है। भारत में अभी इसका अनुभव नहीं किया गया है। इसलिये यहां ऐसा नहीं

हो रहा है। लेकिन रेडियो और टीवी पर कुछ अवसरों पर दीनी प्रोग्राम प्रस्तुत किये जाते हैं। दूसरे देशों में, कुछ अरब की संस्थाओं में, वो इनके द्वारा लाभान्वित हो रही हैं और इस पर बहुत रूपया ख़र्च करती हैं। इनकी न्यूज़ एजेन्सियां भी हैं, उन्होने टीवी के कुछ समय ख़रीद लिये हैं और कुछ ने अपने अलग चैनल स्थापित कर लिये हैं। कुछ जगह जैसे रेडियो में समय लिया जाता है। उन्होने इसी तरह टीवी में समय ले लिया है, और वो उनमें अपना धार्मिक प्रोग्राम प्रस्तुत करते हैं। ऐसी संस्थांए और कम्पनियां हैं जो स्वंय इस्लामी विषयों के कैसेट आडियो (Audio Cassette) और वीडियो (Video Cassette) तैयार करती हैं, जो गानों, नाटकों, और संवाद (Dialogue) पर आधारित होते हैं ये सिलसिला भी बहुत प्रचलित होता जा रहा है।

ऐसे प्रोग्रामों का समाज पर कितना अच्छा असर पड़ रहा है और खुद टीवी वालों में कैसा रूझान पैदा हो रहा है इसका अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि कुछ महीने पहले मिस्र में टीवी प्रोग्राम प्रस्तुत करने में कला की महारत रखने वाली सात औरतों ने इन धार्मिक प्रोग्रामों से प्रभावित होकर पर्दा करने का फैसला कर लिया, इस पर टीवी वालों ने उन्हे नौकरी से निकाल दिया जब उनको निकाल दिया गया तो लोगों ने वो प्रोग्राम देखना बन्द कर दिया। क्योंकि वो इतना अच्छा प्रोग्राम प्रस्तुत करती थीं कि उनकी जगह जब दूसरी फ़नकार औरतें आयीं तो उस प्रोग्राम की ख़्याति समाप्त हो गयी। इससे उनका नुक़सान होने लगा। जिम्मेदारों ने जब ये महसूस किया कि प्रोग्राम पेश करने का इनका अन्दाज़ इतना अच्छा है तो सोच विचार के बाद कमेटी ने उन्हे नौकरी पर बहाल करते हुए पर्दा करने की इजाज़त दे दी कि वो एहतियात के साथ वो प्रोग्राम करें। इन आर्टिस्टों ने कहा कि हम पूरा पर्दा करेंगे, आख़िरकार उनको उनकी मर्ज़ी के अनुसार पूरा पर्दा करते हुए प्रोग्राम पेश करने की इजाज़त दी गयी।

इससे पहले टीवी की एक मशहूर फ़नकारह क़ीमान हमज़ा ने भी पर्दा करने का फ़ैसला किया। ये टीवी की सबसे बड़ी फ़नकारा थीं। उनको उन लोगों ने नौकरी से अलग कर दिया तो उन्होने इस्लामी प्रोग्राम पेश करने के लिये टीवी के प्रोग्राम के लिये एक व्यवस्था बनायी लोगों ने उनकी मदद की और वो इसमें कामयाब हुईं, इनके प्रोग्राम बहुत प्रसिद्ध हुए और सारी दुनिया में पसन्द किये जाने लगे। इनका प्रोग्राम इन लोगों के लिये खुद एक चैलेंज बना गया। कहने का अर्थ कि मीडिया में इस तरह के इस्लामी रूझान पैदा हो गये हैं और क्षेत्र बढ़ता ही जा रहा है।

भारत में हमको इस स्थिति का अन्दाज़ा नहीं है। इस्लामी दावत की जो शक्लें दुनिया के दूसरे भागों में अपनायी जा रही हैं, हमें उनका ज्ञान नहीं। इसी तरह पत्रकारिता में जो बहुत श्रेष्ठ स्तर की पत्रिकांए है, उच्चस्तरीय किताबें हैं, चाहे वो अरबी हो या अंग्रेज़ी, या दूसरी ज़बानों में, वो विभिन्न संस्थाओं से यहां तक कि यूरोप के विभिन्न देशों से निकल रहीं हैं। उनसे हमारा संबंध नहीं रहता लेकिन ये वो साधन हैं जो मार्ग (Trends) निश्चित करते हैं। उनके अध्ययन से मायूसी के बजाए उम्मीद पैदा होती है और सम्भावनांए (Optimism) बढ़ती हैं। मुसलमानों में इनसे जो लोग परिचित हैं इन तमाम चीज़ों वो बहुत आशावादी हैं। मीडिया या प्रचार प्रसार के साधन से यूरोप में बहुत अधिक संख्या में ज्ञानी लोग मुसलमान हो रहे हैं। उनसे ये साधन इन्टरव्यू करते हैं, इसका भी अच्छा प्रभाव पड़ता है।

दिल्ली में दिसम्बर 2003ई0 में एक फ़िक्ही वर्कशाप हुआ। इस अवसर पर एक मुसलमान ज्ञानी से मुलाक़ात हुई, जो अमरीका से आये थे, ये मिस्री मूल के थे और अमरीका में एक शिक्षण संस्था के ज़िम्मेदार हैं। उनसे अमरीका और यूरोप के बारे में बातचीत हुई, 9 सितम्बर के बाद से इस्लामी दावत के काम के सिलसिले में विचारों का आदान–प्रदान हुआ। उन्होने बताया कि एक ओर सख़्त कार्यवाहियां हो रही हैं जो बहुत तकलीफ़ पहुंचाने वाली हैं, लोग जेलों में हैं, उनको कष्ट पहुंचाया जा रहा है। इस्लामी सरगर्मियों व मुसलमानों की नक़ल व हुरमत की निगरानी हो रही है। इस्लाम के विरुद्ध मीडिया सख़्त विरोधी प्रोपगन्डा कर रहा है। मगर दूसरी ओर इसकी जो प्रतिक्रिया हो रही है, वो प्रतिक्रिया इस्लाम के हक़ में जा रही है। मीडिया के विरोधी प्रोपगन्डे की प्रतिक्रिया के तौर पर लोगों में इस्लाम की हक़ीक़त जानने की फ़िक्र पैदा हो रही है और इस्लामी लिट्रेचर के अध्ययन का रूझान बढ़ रहा है। इस कारण से अत्यधिक संख्या में लोग मुसलमान हो रहे हैं। उन्होने खुद ये बताया कि बहुत तेज़ी से लोग इस्लाम की प्रति आकर्षित हो रहे हैं। तेज़ी से इस्लामी लिट्रेचर फैल रहा है और लोग इस्लाम के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानना चाहते हैं। (शेष पेज 12 पर)

पाश्चिमी सभ्यता एक निरीक्षण

अब्दुस्सुबहान नारवुदा नदवी

पश्चिमी सभ्यता ने हमारी इस दुनिया पर जितना बड़ा जुल्म ढ़ाया, मानव इतिहास में शायद इसका उदाहरण न मिल सके। रोम, ईरान का अत्याचारो से भरा हुआ इतिहास भी इसके सामने छोटा है। तातारियों की अन्तर्राष्ट्रीय साज़िशें भी एक विशेष सीमा तक सीमित थीं। लेकिन इस सभ्यता ने जीवन के सभी तरीक़ों पर अपना प्रभाव डाला, और दुनिया में स्वभाविक रूप से जो सादा जीवन व्यतीत हो रहा था इस सभ्यता ने अपने बदबूदार तरीक़ों से इसे परिपूर्ण कर दिया। स्वाभाविक रूप से साफ़–सुथरी आवश्यकताओं से विरोध पर उस सभ्यता की पूरी इमारत खड़ी की गयी। इसका सामना अगर कोई कर सकता था तो धार्मिक शिक्षांए और आसमानी हिदायतें कर सकती थीं। लेकिन धर्मों पर निगाह डाली जाए तो वो स्वंय उस सभ्यता से प्रभावित हैं और उम्मतों ने उससे हार मान ली है और अपने लिये हंगामें से भरपूर ज़िन्दगी से दूर एक सुकून भरे कोने पर शुक्र कर लिया है। दूसरी सभ्यताओं पर अगर निगाह डाली जाए तो यही मालूम होगा कि लगभग–लगभग हर सभ्यता ने पश्चिमी सभ्यता के इस सैलाब में अपने आप को गले तक डुबो लिया है। बल्कि हर देश की सभ्यता इस सभ्यता को आधार मान कर इससे भी आगे जाने के लिये बेचैन व बेक़रार है। चाहे वो चीन हो या जापान, हिन्दुस्तान हो या कोरिया, या दुनिया का कोई कोना, हर जगह वही बेहयाई, स्वंयभू नियम, अस्वाभाविक जीवन, खोखली हंसी और बेमज़ा ज़िन्दगी है, जिसमें न मुहब्बत की चाशनी है, न उल्फ़त की मिठास, न चाहतों के फूल खिलते हैं, न अपनाइयत की खुशबू महकती है। इस सभ्यता का अगर किसी ने मुक़ाबला किया है और जिसे सही तौर पर इसका दावा है कि वो दुनिया को वास्तविक प्रसन्नता प्रदान कर सकती है तो वो इस्लाम है, केवल और केवल इस्लाम। अफ़सोस तो मुसलमानों पर है कि उन्होंने इस्लाम की सच्ची जीती जागती तस्वीर पेश नहीं की, वो नबी की शिक्षाओं व हिदायतों के न समाप्त होने वाले नमूने सामने न ला सके। खुदा के लाज़वाल व बेमिसाल हुक्मों को ज़िन्दगी में लागू न कर सके। दूसरों की देखा देखी इस बहती गंगा में हाथ धोना पसन्द किया, जिसका नतीजा ये हुआ कि न घर क रहे न घाट के।

पश्चिमी सभ्यता ने स्वाभाविक जीवन का जो विरोध किया उसके कुछ नमूने ये हैं:

1– औरतों को हर मैदान में ज़बरदस्ती मर्दों के मुक़ाबले लाकर खड़ा किया और उसकी क़ीमत ये वसूल की कि औरत औरत न रही। एक मनोरंजन का साधन बन गयी। बल्कि सही शब्दों चिड़िया घर की एक जानवर बन गयी। जिसका तमाशा देखने के लिये रोज़ इन्सानों की भीड़ लगती है। मनोंरजंन ये कि इस बदतरीन रुसवा करने वाली गुलामी की ज़ंजीरें उसकी गरदन में आज़ादी के नाम पर डाल दी गयीं। उसके स्त्रीत्व को समाप्त कर दिया गया। उसे घर से बाहर निकाला गया। बीच चौराहे पर उसकी इज़्ज़त नीलाम की गयी। फिर आर्ट, कला, उन्नति, फ़ैशन, सभ्यता, औरतों के अधिकार, नारी स्वतन्त्रता के नाम पर उसके स्त्रीत्व की एक–एक अदा को नोच–नोच कर फेंक दिया गया। ज़माने भर के भेड़ियों और कुत्तों के झुंड में, आज़ादी का एहसास दिलाकर उसे अकेला छोड़ दिया गया। ताकि हर भेड़िया जी भर कर उसका खून चूसे और हर कुत्ता आराम से उसे काटता रहे। आज पूरी दुनिया पर ख़ास तरह का पागलपन सवार है, वो ये कि औरत को मर्द की बराबरी पर आना चाहिये वरना दुनिया को बहुत बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। कोई ये सोचने को तैयार नहीं कि इस अस्वाभाविक काम का परिणाम कैसा भयानक निकलेगा और निकल रहा है। स्वाभाव से औरत कमज़ोर है और रक्षा योग्य भी। ये सुरक्षा एक मज़बूत घराना और नेक समाज ही दे सकता है। वहीं से उसकी जड़ काटी गयी और आज़ादी के नाम पर भूके भेड़ियों व कुत्तों के हवाले उसे कर दिया गया। क्या इससे भी बढ़कर कोई बड़ा मज़ाक़ हो सकता है।

2– बच्चो में गलत तरह की आज़ादी का एहसास

औरतों की तरह बच्चों की भी सुरक्षा करनी चाहिये। ये सुरक्षा भी माता–पिता करते हैं। घरेलू ख़ानदानी व्यवस्था इसकी धरोहर है। इस मन्हूस सभ्यता ने या जीवन बिताने

के तरीक़े ने इन फूलों की अस्ल खुशबू को तबाह कर दिया। मां–बाप से उनको अलग किया। नौजवानी का खुमार उनमें इस क़दर भर दिया कि वो इसके जोश में अपने मां–बाप और सभी चाहने वालों से अलग–थलग हो गये। मां–बाप के स्वाभाविभ प्रेम की कोई चिन्ता नहीं की। उनको एक मशीन की हैसियत दी कि वो एक लम्बी उम्र तक बच्चों को परवान चढ़ाएं, फिर उनमें और दूसरे अजनबियों में कोई अन्तर नहीं। फिर अगर वो डांट भी दें तो लड़का पुलिस को बुलाकर उनके हथकड़ी लगवा सकता है। एक ख़ास उमर को पहुंचने के बाद वो बच्चा उनके जिगर का टुकड़ा नहीं बल्कि केवल एक पत्थर है जिस पर केवल सर फोड़ा जा सकता है उससे ज़्यादा कुछ नहीं। क्या सितम ढाया है कि एक मां और एक बाप अपने बच्चों की तरबियत इस एहसास के साथ करें कि एक ख़ास उम्र में पहुंचने के बाद हमारा उन पर कोई हक़ नहीं रहेगा। हमें अपने सभी जज़्बातों को कुचलना पड़ेगा। हमारा उनसे वही संबंध क़ानूनी तौर पर माना जाएगा जो एक अजनबी का दूसरे अजनबी से होता है। रूखा, सूखा और फीका। इस मुहब्बत भरे जज़्बे को आख़िर किसने ख़त्म किया। किसने बच्चों को मां–बाप से दूर किया। घर से अलग किया। समाज से काट कर रख दिया। सामूहिक जीवन से दूर ला फेंका। अनैच्छिक एंव बनावटी जीवन में डाल दिया। ये केवल और केवल इसी हानिकारक सभ्यता की देन है। बच्चों की फ़ितरी पाकीज़ा मासूमियत की क़ातिल भी यही सभ्यता है। और मां बाप की फ़ितरी साफ़–सुथरी मुहब्बत को ज़िब्ह करने वाली भी यही है। इसे बहुत बारीकी से पहचानने की ज़रूरत है।

3– मर्द औरत का मेल–मिलाप

मर्दों और औरतों का मेल मिलाप कितने घरों को जहन्नम बना देता है। इसे कहने की आवश्यकता नहीं। उनके बीच एक पवित्र सीमा दोनों के लिये सुकून का कारण थी। इच्छाओं की पूर्ति के लिये दीन व धर्म ने कितने साफ़ सुथरे तरीक़े दिये थे। इसे अपनाकर हज़ारों साल तक इन्सान ने चैन व इत्मिनान का जीवन व्यतीत किया था। इस सीमा रेखा को मिटा दिया गया और मानवों को जानवरों के स्तरों पर लाया गया। घरानों के घराने इससे उजड़ गये। न मर्द को सुकून मिला न औरत को ही सुकून मिल पाया। हर ओर एक आग सी लगी हुई है और आग के इस दरिया में झुलसना जिन्दगी का मक़सद हो गया। यही चीज़ जब किसी के अपने घर में होती है तो आंखें खुलतीं हैं और चीख़ पुकार मचाई जाती है। जबकि दूसरों के साथ इस तरह के खेल को नयी सभ्यता की जान घोषित कर दिया जाता है। आख़िर ये सभ्यता मानव की कितनी विशेषताओं को नष्ट करेगी। इसे किस हद तक मुनाफ़िक़ बनाएगी। शायद किसी को मालूम न हो, लेकिन अन्दाज़ा ये है कि इन्सानों को या दुनिया की क़ौमों को उस समय होश आयेगा जब सब कुछ जल कर राख हो चुका होगा और वापस लौटना शायद संभव न होगा। ऐसी स्थिति में दीन वालों और इल्म वालों की जिम्मेदारी और ज़्यादा हो जाती है। इतनी कि जिसकी कोई हद नहीं। अल्लाह के दिये हुए बसीरत के नूर की रोशनी में ये बात कही जा सकती है।

मूल्यों का हनन

जीवन चाहे भौतिक हो या आत्मिक अपने अन्दर चाह रखता है। जिसकी पूर्ति का सामान इस दुनिया में कुदरत की ओर से रख दिया गया है। भूख, प्यास से लेकर कपड़ा व मकान तक जितनी भी जीवन की आवश्यकतांए हैं उनको हम चाह की जगह रख सकते हैं, और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सामान की उपलब्धता को हम जिन्दगी की सहूलियत कह सकते हैं। इसी को हम समाज की इस्तलाह में मांग व याचना कहते हैं। भौतिक चीज़ों की मांग की पूर्ति इन्सानी विशेषतांए नहीं हैं। इसलिये कि बेज़ुबान जानवर व बेअक़्ल परिन्दे भी ये काम करते हैं। पश्चिमी सभ्यता को इस पर आपत्ति है कि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सहूलतों की उपलब्धता अस्ल इन्सानी विशेषता है। इसमें जो व्यक्ति जितनी गहराई में पहुंचे वो उतनी ही विशेषता रखने वाला है। आवश्यकताओं के दायरे को बढ़ाकर इच्छाओं को इसमें डाला गया और इच्छा की पूर्ति भी इन्सानी विशेषता घोषित की गयी। और इस सिलसिले में पेश आने वाली किसी भी रुकावट को दूर करना इन्सानी हक़ करार दिया गया। ये नियम बनाया गया कि इच्छाओं का कोई दायरा नहीं हो सकता और इच्छाओं को पूरा करने के लिये कोई नियम तोड़ा नहीं जा सकता। बेलगाम इच्छांए और बे रोक–टोक उसकी पूर्ति। ये उस सभ्यता का शायद भावार्थ है। हम ये जानते हैं कि भौतिक क्षेत्र के अतिरिक्त भी मानव के अन्दर कुछ कमी पायी जाती है। जिसे पूरा करने पर हम खुश होते हैं। और हमारे अन्दर ये एहसास उभरता है कि हमने अपने अन्दर की एक ज़रूरत को पूरा कर लिया। इन्सानी हमदर्दी और उदार भावना के आधार पर जितने भी काम होते हैं वो इसी वर्ग में आते हैं। भूखे को खिलाना, नंगे को पहनाना, किसी की कोई परेशानी दूर करना, यतीम और कमज़ोरों की मदद करना, किसी बेवा के काम आना, मेहमान के साथ अच्छा सुलूक करना, अपने रिश्तों की पहचान रखना और उनके साथ अच्छा मामला

रखना बड़ों के साथ अदब करना और छोटों पर शफ़क़त करना। जो कोई सही अक़्ल रखता है वो इनका इनकार भी नहीं कर सकता कि उन कामों से भी इन्सान के अन्दरूनी भाव को सुकून प्राप्त होता है। ये एक मानी हुई हक़ीक़त है जिसे हर दौर के इन्सानों ने माना है। चाहे वो किसी भी धर्म के हों या किसी भी देश से संबंध रखते हों, इसी चीज़ का नाम व्यवहार है। यही इन्सान की विशेषता है। ये अपना मूल्य खुद हैं। किसी लाभ हानि से जोड़कर उनकी मूल्य नहीं आंका जा सकता। बिल्कुल वैसे ही जैसे जीवन की दूसरी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अपना मूल्य आप हैं। किसी दूसरे भौतिकी स्तर से उनके मूल्य को निश्चित नहीं किया जा सकता।

पश्चिमी सभ्यता ने बहुत बड़ा अन्याय किया है कि किसी मानवीय भाव व उच्च व्यवहार को लाभ हानि के तराज़ू में रख कर उसका मूल्य निश्चित किया। फ़िर वो सभी उच्च व्यवहारिक स्तर उस लिस्ट से अलग कर दिये जिनका कोई भौतिक लाभ नहीं था। और वो व्यवहार रहने दिये जो लाभ की स्थिति में परिणाम दे सकें। इस विचार से व्यापारिक व्यवहार अस्तित्व में आये और वो भी पूरे हिसाबी नियम के साथ कि उसी स्तर तक व्यवहार निभाया जाए जिस स्तर तक लाभ की संभावना हो। वरना घाटे का सौदा होगा। मानवीय भाव को समाप्त कर देने की ये बहुत ही मकरूह साज़िश जो पर्दे के पीछे रची गयी थी फिर उसको मानवाधिकार के नाम पर प्रस्तुत किया गया। जिसने मानवीय सोच को प्रभावित किया। और एक संख्या ऐसी अस्तित्व में आयी जो अच्छे एहसासों और साफ़ सुथरे विचारों से लगभग ख़ाली थी। मानो उनकी ज़िन्दगी का एक पहलू ही ग़ायब था। जैसे फ़ालिज की बीमारी के इन्सान होते हैं जिनका एक हिस्सा बिल्कुल काम नहीं करता। पश्चिमी सभ्यता ने दुनिया को ऐसे ही बीमार इन्सान दिये, अधूरे, अपूर्ण, जो इन्सानी सभ्यता की विशेषताओं की बर्बादी को श्रेष्ठ नियम घोषित कर देते हों वो मुकम्मल इन्सान कहां से लायेगी!

याद रखिये बेहया जानवर बन कर ही पश्चिमी सभ्यता का मज़ा उठाया जा सकता है, इज़्ज़तदार इन्सान बन कर नहीं। ये सभ्यता सरासर स्वार्थ है। और इस्लामी सभ्यता सम्पूर्ण अपनाइयत, स्वार्थ की कड़वाहट और अपनाइयत की मिठास हर शऊर वाले को मालूम होगी। कह दीजिएः (गन्दी चीज़ और साफ़ चीज़ दोनो बराबर नहीं हो सकती, चाहे तुझे गन्दगी की अधिकता कितनी अच्छी लगे) (मगर है तो वो गन्दगी)

शेष : मीडिया और इस्लाम की दावत

उन्होने कहा कि थोड़ा सा जो इम्तिहान है उस इम्तिहान में तकलीफ़ ज़रूर पहुंच रही है लेकिन इसके जो नतीजे हैं वो बहुत ही खुश करने वाले हैं। वो बहुत आशावादी थे। उन्होने ये भी कहा कि ढ़ाई तीन हज़ार आदमी इस समय अमरीका की विभिन्न जेलों में हैं लेकिन हमें ये भी देखना चाहिये कि खुद मुस्लिम देशों में क्या हो रहा है? उससे अधिक बड़ी संख्या जेलों में है और इस्लामी काम की राहों में वहां के शासन की ओर से अधिक रुकावटें पैदा की जा रहीं हैं। उन्होने बताया कि मिस्र में बीस हज़ार आदमी जेलों में है। यही हाल त्यूनिस, सीरिया और ईराक़ का है। लेकिन जो लोग जेल में हैं उनके हौसले बुलन्द हैं। जेल की तकलीफ़ काटने के बाद जब निकलते हैं तो उनके इरादे वैसे ही मज़बूत होते हैं। उनकी ख़बरें प्रेस में आती रहती हैं। मिस्र में जो इख़्वानी या इस्लामी ज़हन रखने वाले पकड़े जाते हैं उनको कष्ट पहुंचाया जाता है। टार्चर होने के बाद जब वो जेल से बाहर निकलते हैं तो वो उन लोगों से ज़्यादा मज़बूत होते हैं जो इस इम्तिहान से नहीं गुज़रे। इसका अनुभव हमकों खुद मिस्र के एक सफ़र में हुआ। एक ऐसे ही व्यक्ति से मुलाक़ात हुई जो कई साल जेल में रहा। उस पर उसके प्रभाव थे। वो बहुत तकलीफ़ में था। इसके बाद भी वो खुलकर अपने जज़्बात को ज़ाहिर कर रहा था और शासन की निंदा कर रहा था। हमने कहा कि अब आपको इहतियात करनी चाहिये, उसने कहा कि हमारे साथ जो हो चुका है अब उससे ज़्यादा क्या होगा? वो हमारा अब और क्या करेंगे? प्रेस में भी ये सब चीज़ें आती रहती हैं, ऐसे लोगों के हालात व जज़्बात छपते रहते हैं और ये जज़्बा व कुर्बानी जिसके बारे में प्रेस या दूसरे साधनों से पता चलता है, इस्लाम की ओर आकर्षित करने का साधन बनता है। इस भाव के उत्पन्न करने में पक्षपाती मीडिया या शासन के रवैये का भी हाथ है और इस्लामी मीडिया का भी, चाहे वो किताब की शक्ल में हो, या अख़बार और रेडियो की शक्ल में। चाहे वो कितना ही छोटा क्यों न हो उसे हर मैदान में अपना कुछ न कुछ अस्तित्व स्वीकार करना है। और कम साधनों के बावजूद उसके परिणाम प्रकट हो रहे हैं, वो परिणाम अत्यधिक आशावादी हैं।

मुसलमानों का खून बहाना जाएज़ नहीं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि0) कहते हैं रसूलुल्लाह (स0अ) ने फ़रमाया जो मुसलमान इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है और मैं अल्लाह तआला का रसूल हूं तो उसका खून बहाना जाएज़ नहीं है।(बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत उमर (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ) ने फ़रमाया कि जब तक कोई मुसलमान बेजा क़त्ल नहीं करता उस वक़्त तक वो दीन में रहता है यानि अल्लाह तआला की रहमत का उम्मदीदवार होता है। (बुख़ारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला सबसे पहले लोगों को जिन मामलों में हुक्म सुनाएगा वो खून (क़त्ल) के मामले होंगे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला के निकट दुनिया की समाप्ति आसान है मुसलमान आदमी के क़त्ल से। (तिरमिज़ी, नसाई)

हज़रत अबू सईद (रज़ि0) और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया है कि अगर आसमान वाले और ज़मीन वाले दोनों किसी मुसलमान के क़त्ल में शामिल हों तो अल्लाह तआला उन सबको दोज़ख़ की आग में उल्टा डालेगा। (अबू दाऊद)

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इरशाद फ़रमाया कि जो बेतौफ़ीक़ मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान बन्दे की किसी ऐसे मौक़े पर मदद नहीं करेगा जिसमें उसकी इज़्ज़त पर हमला हो और उसकी आबरू उतारी जाती हो तो अल्लाह तआला उसको भी ऐसी जगह अपनी मदद से महरूम रखेगा जहां वो अल्लाह की मदद का इच्छुक होगा। और जो (बातौफ़ीक़ मुसलमान) किसी मुसलमान बन्दे की ऐसे मौक़े पर मदद और सहयोग करेगा जहां उसकी इज़्ज़त व आबरू पर हमला हो तो अल्लाह तआला ऐसे मौक़े पर उसकी मदद फ़रमाएगा जहां वो उसकी मदद का तलबगार होगा। (सुनन अबू दाऊद)

हज़रत मआज़ बिन अनस अन्सारी (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया कि जिसने किसी बद्दीन मुनाफ़िक़ के शर से किसी मुसलमान बन्दे की मदद की (जैसे किसी दुष्ट बद्दीन ने किसी मोमिन बन्दे पर कोई इल्ज़ाम लगाया और किसी बातौफ़ीक़ मुसलमान ने उसकी मदद की) तो अल्लाह तआला क़यामत में एक फ़रिश्ता नियुक्त करेगा जो उसके गोश्त (यानि जिस्म) को जहन्नम की आग से बचाएगा और जिस किसी ने किसी मुसलमान बन्दे को बदनाम करने और गिराने का कि उस पर कोई इल्ज़ाम लगाया तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम के पुल पर क़ैद कर देगा। उस समय तक के लिये कि वो अपने इल्ज़ाम की गन्दगी से पाक साफ़ हो जाए।

मतलब ये है कि किसी मोमिन बन्दे को बदनाम व रुसवा करने के लिये उस पर इल्ज़ाम लगाना और उसके ख़िलाफ़ प्रोपगन्डा करना ऐसा संगीन और इतना सख़्त गुनाह है कि इसका करने वाला चाहे मुसलमानों में से हो जहन्नम के एक हिस्से पर (जिसको हदीस में जसर–ए–जहन्नम कहा गया है) उस समय तक के लिये अवश्य क़ैद में रखा जाएगा जब तक कि जल भुन कर अपने इस गुनाह की गन्दगी से पाक साफ़ न हो जाए। जिस तरह कि सोना उस समय तक आग पर रखा जाता है जब तक कि उसका पूरा मैल ख़त्म न हो जाए। हदीस के ज़ाहिरी लफ़्ज़ों से ये मालूम होता है कि ये गुनाह अल्लाह के यहां माफ़ी के क़ाबिल नहीं हैं। लेकिन आज हम मुसलमानों का हमारे ख़ास लोगों तक का ये मज़ेदार काम है।

हज़रत अबू दर्दा (रज़ि0) से रिवायत है कि मैने रसूलुल्लाह (स0अ) से सुना है आप फ़रमाते थे कि जब कोई मुसलमान अपने किसी मुस्लिम भाई की आबरू पर होने वाले हमले का जवाब दे (और उसकी तरफ़ समाप्ति करे) तो ये अल्लाह तआला का ज़िम्मा होगा कि वो क़यामत के दिन जहन्नम की आग को उससे दूर करे..... फिर सनद के तौर पर) आपने ये आयत तिलावत फ़रमायीः (अनुवादः और हमारे ज़िम्मे है ईमान वालों की मदद करना)

आपके दीनी सवालात

और

उनके जवाबात

क़ुरान की क़सम खाना

प्रश्नः अगर किसी ने क़ुरान की क़सम खाई और पूरा न करे तो क्या करना होगा? (अली ख़ान, फ़तेहपुर)

उत्तरः अगर कोई व्यक्ति क़ुरान या अल्लाह की क़सम खा लेता है और फिर तोड़ देता है, तो उसको तीन में से एक काम करना वाजिब होगाः

1. दस ग़रीबों को खाना खिलाए।
2. एक ग़ुलाम को आज़ाद करे।
3. तीन दिन रोज़ा रखे।

माहवारी की हालत में मेंहदी लगाना

प्रश्नः अगर किसी लड़की ने माहवारी की हालत में मेंहदी लगायी तो उसका क्या हुक्म होगा?सुना है कि अगर किसी लड़की ने ऐसा किया तो वो चालिस दिन तक पाक नहीं होती है? (अली ख़ान, फ़तेहपुर)

उत्तरः माहवारी की हालत में मेंहदी लगाना आम दिनों में ही लगाने की तरह जाएज़ है और बाक़ी सब सुनी सुनाई बातें हैं। बस ऐसी कोई चीज़ न लगांए जिसकी परत बैठ जाए। जैसे नेल पालिश, लिपिस्टिक, इत्यादि। क्योंकि उसको छुड़ाए बिना ग़ुस्ल ठीक नहीं।

क़ज़ाए उमरी

प्रश्नः मेरे दादा नमाज़ के बहुत पाबन्द हैं, और रोज़ाना की नमाज़ों के अलावा वो क़ज़ाए उमरी भी पढ़ते हैं, मगर मसला ये है कि उनको ये नहीं मालूम की उनसे ज़िन्दगी में कितनी नमाज़ें छूंटी हैं? (ताहिर, मलेशिया)

उत्तरः इसके लिये आपको खुद अपना दिमाग़ टटोलना होगा और अन्दाज़ा लगाना होगा कि कितने दिनों से आप पर नमाज़ फ़र्ज़ है, फिर ग़ौर कीजिए कि पांचों नमाज़ों में कौन सी नमाज़ ज़्यादा छूटती रही है, इन सभी बातों को सामने रखकर आप अन्दाज़ा लगाइये और और जितनी नमाज़ें आपके ख़्याल से छूटीं हैं उनको अदा करना शुरू कर दें। अगर ये पाबन्दी कर लें कि जो नमाज़ अदा करें उस नमाज़ की बाक़ी छूटी नमाज़ों में से एक नमाज़ भी अदा करते जांए तो आसानी होगी। इसके बावजूद अगर कुछ नमाज़ें बाक़ी रह गयी तों अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसे माफ़ कर देंगे।

ग़ैर मुस्लिम को सदक़ा देना

प्रश्नः क्या सदक़ा/ख़ैरात ग़ैर मुस्लिमों को दिया जा सकता है? (अली ख़ान)

उत्तरः सदक़ा/ख़ैरात (वाजिब) जैसेः ज़कात, कुर्बानी की खाल का पैसा इत्यादि, ग़ैर मुस्लिमों को नहीं दिया जा सकता है।

सदक़ा/ख़ैरात (नफ़िल) जैसेः बीमारी से ठीक होने के बाद सवाब की नियत से सदक़ा इत्यादि, इस प्रकार के सदक़े को ग़ैर मुस्लिमों को दिया जा सकता है।

नग्न होकर वज़ू करना

प्रश्नः नहाने के बाद कपड़े पहने बिना (नग्न अवस्था में) वज़ू करना कैसा है?वज़ू करके कपड़े बदलने से क्या वज़ू टूट जाता है? (अली ख़ान)

उत्तरः ग़ुस्लख़ाने में नग्न अवस्था में वज़ू करने में कोई हर्ज नहीं है और न वज़ू के बाद कपड़े बदलने में हर्ज है।

नमाज़ में कोहनियों का खुला रहना

प्रश्नः टी–शर्ट पहनता हूं, और इसी हालत में नमाज़ भी पढ़ लेता हूं, मेरी कोहनियां खुलीं रहती हैं, क्या मेरी नमाज़ हो जाएगी? (इमरान आज़मी, मुम्बई)

उत्तरः नमाज़ में कोहनी खुली रहने से नमाज़ हो जाएगी, लेकिन ये अदब के ख़िलाफ़ है, इसलिये ऐसे कपड़े पहन कर नमाज़ पढ़ना चाहिये जिससे कोहनियां बन्द हों।

नज़रो की हिफ़ाज़त

प्रश्नः मैं कालिज में पढ़ता हूं, मेरे कालिज में लेडी टीचरें भी हैं जो हमको पढ़ाती हैं। क्या इस बात की इजाज़त है कि हम उनको पढ़ाई के दौरान उनको देखें और उनसे बहस कर सकें? (मुहम्मद जुनैद अहमद)

उत्तरः अगर बुरे ख़्याल पैदा होने का अन्देशा न हो तो बहस के समय उचटती हुई निगाह पड़ जाए तो उसमें कोई हर्ज नहीं, लेकिन अनावश्यक देखने और बातचीत करने से बचा जाए। वल्लाहु आलम

आप वोट किसको दें ?

इस्लामी दृष्टिकोण से

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

भूतकाल में देशो का विभाजन धर्म एंव नस्लों आदि के अनुसार हुआ करता था। देश किसी विशेष धर्म या नस्ल से सम्बन्ध रखने वालों का हुआ करता था और वह देश के प्रथम श्रेणी के नागरिक हुआ करते थे। प्रायः देश की राजनीतिक दशा से उनको बहुत कम रूचि होती थी। परन्तु आज युग बदल चुका है दुनिया एक गांव बन गई है। देश में विभिन्न प्रकार के धर्म और नस्ल के लोग रहते हैं। और कम से कम कानून के अनुसार प्रथम श्रेणी व द्वितीय श्रेणी के नागरिक जैसी कोई बात नही पाई जाती। यही स्थिति यूरोपीय देशों में लगभग हर जगह दिखाई देती है। भारत में भी लगभग कुछ अन्तर के साथ यही स्थिति है। और अन्तर यह है कि यूरोपीय देशों में दूसरे धर्म वाले बाद में जाकर आबाद हुए जबकि भारत में विभिन्न प्रकार की जातियां सदियों से आबाद हैं।

इस स्थिति को देखते हुए भारत और यूरोपीय देशों में आबाद मुसलमानों को कई समस्यों का सामना है। इन्ही समस्याओं में से एक मुख्य समस्या चुनाव में भागीदारी की भी है। यह समस्या मुसलमानों के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इस्लाम धर्म दूसरे धर्मों की तरह केवल कुछ परम्पराओं को अपना लेने का नाम नही है। इस्लाम में जीवन के सभी विभागों के लिए निर्देश दिये गये हैं। और कोई भी व्यक्ति उसी समय पक्का मुसलमान कहलाने के योग्य होगा जबकि वह उन सभी निर्देशों और नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करे। जबकि भारत सहित इस प्रकार के सभी देशों का आधार धर्मनिरपेक्षता पर है। इस्लाम में वास्तविक शासक अल्लाह तआला है। हर प्रकार की स्थितियों में उसी के आदेशों का पालन करना आवश्यक है। जबकि इन देशों में शक्ति का स्त्रोत प्रजातन्त्र है और लोकसभा बहुमत के बलबूते पर कोई भी विधान पारित कर सकती है। इस प्रकार इस क्रम में हिस्सा लेना एक प्रकार से इसे स्वीकार कर लेना है। यही कारण है कि भारत और इस प्रकार के दूसरे देशों में मुसलमानों के तीन प्रकार के अलग अलग दृष्टिकोण पाये जाते हैं।

1:– देश की प्रजातन्त्र और धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था के अनुसार राजनीतिक मामलों में दूसरे देश वासियों की तरह पूर्ण रूप से भागीदारी।

2:– राजनीतिक मामलों से पूरी तरह अलग रहना।

3:– कुछ सावधानियों के साथ भागीदारी।

इन तीनों प्रकार के लोगों में से अधिकतर लोग पहले दल में हैं। फिर इस दल के भी अधिकतर लोग दीन को दुनिया से अलग करने से सम्बन्धित ज़हरीले प्रोपगण्डों से प्रभावित हैं। यह लोग अपने इस प्रकार के विचारों के लिए शरीयत के किसी तर्क (दलील) की भी आवश्यकता नही समझते बल्कि उनका मस्तिष्क भी कभी इस ओर नही जाता।

दूसरे समुदाय का तर्क यह है कि प्रजातन्त्र और लोकसभा की कार्यवाही में कानून निर्धारित करने का अधिकार लोकसभा के पास होता है जबकि इस्लाम में वास्तविक रूप से कानून निर्धारित करने वाला अल्लाह है। अल्लाह के सिवा किसी और को इस प्रकार का अधिकार देना शिर्क है क्योंकि अल्लाह का फर्मान है

﴿إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لله﴾

(हुकूमत केवल अल्लाह की ही है)

तीसरा समूह यह सोचता है कि इस प्रकार की स्थिति में मुसलमान अगर राजनीति को अपना मुख्य मैदान बनायेंगें तो दूसरों के विपक्षी समझे जाऐंगे और अल्पसंख्यक होने के कारण लाभ के बजाए नुक़सान उठाएगें। इसलिए उन्हे अपना मुख्य मैदान शिक्षा, उद्योग, शिल्पकारी और कल्याणकारी कार्यों को बनाना चाहिए। राजनीति में उनकी केवल उतनी भागीदारी होनी चाहिए जितनी कि उन्हे शरीयत के अनुसार आवश्यकता है और जो मुख्य कार्यों के लिए मददगार हो। (शेष पेज 19 पर)

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मुहम्मद (स0अ0) की जीवनी सम्पूर्ण व अतुलनीय उदाहरण क्यों?

इन्सान के मिज़ाज और उसकी फ़ितरत की आवश्यकता है कि जीवन के हर भाग में उसके सामने हमेशा कोई ऐसा उदाहरण हो जिसका नक़्शे क़दम पर चलकर वो अपनी यात्रा पूरी कर सके। ये उदाहरण साधारणतयः आंशिक या सामयिक होते हैं। क्योंकि वो इन्सान के स्वंय के निर्मित किये हुए होते हैं इसलिये समय के साथ–साथ उनमें बदलाव भी होते रहते हैं। जिसके कारण से हर दौर और हर क्षेत्र में ये अनुसरण योग्य नमूने बदलते रहते हैं। कई बार एक ही घर के आइडियल व्यक्ति एक–दूसरे से बिल्कुल अलग होते हैं, आम तौर पर इनका संबंध इन्सानी मिज़ाज व उसकी प्रकृति और माहौल के बदलाव के साथ होता है।

इन्सान दिमाग़ या शिक्षा के आधार पर जिस व्यक्तित्व से प्रभावित होता है उसी को वो अपने लिये आडियल समझता है। जबकि दूसरों की नज़र में उसमें बहुत सी ख़राबियां ही क्यों न हों। लेकिन मामला उस समय बिगड़ता है जब उस आइडियल को हर मैदान में अनुसरण के योग्य समझ लिया जाता है। और भिन्न–भिन्न समयों में उससे मार्गदर्शन भी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। जिसका परिणाम स्वाभाविक है कि असफलता के सिवा कुछ हाथ नहीं आता। क्योंकि वो व्यक्ति संभव है कि किसी एक मैदान या एक कला में अनुसरण योग्य हों लेकिन उनको स्थायी और सम्पूर्ण नमूना नहीं बनाया जा सकता। इस सिलसिले में इन्सान सबसे अधिक ठोकरें उस समय खाता है जब वो मज़हबी मामले में किसी को अपने लिये अनुसरण योग्य समझता है और उसके बताए हुए रास्ते पर चलकर दिल व दिमाग़ का सुकून प्राप्त करने का प्रयास करता है। लेकिन दुनिया का कोई भी व्यक्ति हर क्षेत्र में और जीवन के हर भाग में अनुसरण योग्य नहीं है। जिसके कारण इत्मिनान व सुकून के बजाए परेशानी व कठिनाई बढ़ती जाती है और फिर निगाहें किसी दूसरे व्यक्ति के चुनाव का प्रयास करती हैं। इस प्रकार ये क्रम चलता जाता है और इन्सान ठोकरें खाता जाता है।

मुसलमानों पर अल्लाह तआला के बेशुमार एहसानों में से ये भी है कि उसने मुसलमानों को मुहम्मद (स0अ0) की ज़ात में एक सम्पूर्ण और स्थायी नमूना अता फ़रमाया, ये नमूना जीवन के हर क्षेत्र में, हर भाग में, हर मैदान में, हर माहौल में, हर पेशे में, हर शासन में और हर वर्ग में है।

केवल इतना ही नहीं कि आप (स0अ0) की ज़ात मुसलमानों के लिये ही एक नमूना है बल्कि ये नमूना हर धर्म व मिल्लत के व्यक्तियों के लिये भी एक समान अनुसरण योग्य है। जो भी इसको अपनाएगा वो जीवन की वृहदता व उन वृहदता में फैली हुई खुदा की नेमतों से मालामाल होगा। और अगर उस नमूने के साथ वो ईमान भी ले आता है तो वो इस ज़िन्दगी के बाद उस ज़िन्दगी में भी कामयाब होगा जिस ज़िन्दगी में कभी मौत नहीं।

साधारणतयः ये एतराज़ किया जाता है कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद (स0अ0) नमूना तो हैं किन्तु स्थायी या सम्पूर्ण नमूना नहीं हैं, यहां तक कि ये बात एक प्रसिद्ध मुस्लिम स्कालर ने कह दी की मुहम्मद (स0अ0) बेहतरीन नमूना हैं लेकिन सम्पूर्ण नमूना नहीं हैं, और दलील के तौर पर उन्होने ये आयत प्रस्तुत कीः (अनुवादः बेशक तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल की ज़ात में बेहतरीन नमूना है) उनका कहना है कि इस आयत में "बेहतरीन नमूना" कहा गया है न कि सम्पूर्ण नमूना। जबकि हर वो व्यक्ति जो अपनी अक़्ल पर थोड़ा भी ज़ोर देने का प्रयास करेगा वो बखूबी समझ जाएगा कि ये एतराज़ बहुत की बेजा और अनुचित है। क्योंकि दुनिया की मामूली से मामूली चीज़ भी उस समय तक बेहतरीन नहीं कही जा सकती जब तक कि वो मुकम्मल न हो। क्योंकि पहला मरहला सम्पूर्णता का है और फिर हुस्न व खूबसूरती का। और अल्लाह के रसूल (स0अ0) की ज़ात न केवल सम्पूर्ण है बल्कि उसमें ऐसा हुस्न है कि दिल स्वंय उसकी ओर आकर्षित होता है। बस शर्त है दिल को शिर्क की

गन्दगियों से पाक व साफ़ करने की।

विद्वानों के नज़दीक ये सवाल हमेशा से रहा है कि किसी व्यक्ति को सम्पूर्ण व स्थायी अनुसरण योग्य नमूना समझा जा सकता है। और फिर अक़्ल व धर्म के माहिरों ने, और हकीम और फ़लसफ़ी इस नतीजे पर पहुंचे कि किसी भी व्यक्तित्व के अनुसरण योग्य और उसके सम्पूर्ण व अतुलनीय नमूना होने की चार शर्तों का होना आवश्यक है।

1– ऐतिहासिकता 2– सम्पूर्णता

3– व्यापकता 4– व्यवहारिकता

ऐतिहासिकता: इसका मतलब ये है कि एक सम्पूर्ण इन्सान की ज़िन्दगी के जो हालात पेश किये जांए वो ऐतिहासिक रूप से विश्वस्नीय हों। उनकी हैसियत क़िस्सों कहानियों की न हों। ख़्याली और अस्पष्ट जीवनी चाहे कितने ही दिलकश अन्दाज़ में बयान की जांए किसी व्यक्ति पर उनके गहरे और देर तक रहने वाले प्रभाव नहीं पड़ सकते, और कोई इन्सान उन पर अपनी ज़िन्दगी की बुनियादें नहीं रख सकता।

सबसे पुराना धर्म होने का दावा हिन्दुओं को है। मगर उनके देवी देवताओं में से किसी को "ऐतिहासिक" होने की हैसियत हासिल नहीं। रामायण के किन पहलुओं को ऐतिहासिक भाग कह सकते हैं?ख़ुद राम के बारे में इतिहास कुछ नहीं कहता है। इसी प्रकार "महाभारत" केवल एक युद्ध की कहानी है जिसकी वास्तविकता भी ऐतिहासिक आधार से कुछ नहीं।

पुराने ईरानी मजूसी धर्म का संस्थापक ज़रतिश्त जिसका अनुसरण करने वाले आज भी मौजूद हैं। उसके ज़िन्दगी के हालात के सिलसिले में इतिहासकारों की विभिन्न राय हैं जो इतने शक से भरे हैं कि कोई इन्सान उन पर भरोसा करके अपनी जीवन का आधार नही स्थापित कर सकता।

प्राचीन एशिया में बुद्ध धर्म को विशेष महत्व प्राप्त है। एक बड़े भाग पर आज भी उसका शासन स्थापित है और उस धर्म की सभ्यता का वर्चस्व है। लेकिन इसके बावजूद गौतम बुद्ध के जीवन के आधारभूत पहलू भी इतिहास के पन्नों में सुरक्षित न हो सके।

"सामी" क़ौमों में सैकड़ों पैग़म्बर गुज़रे हैं लेकिन उनके नामों के सिवा इतिहास हमें कुछ नहीं बताता। हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत ज़करिया, हज़रत यहया, हज़रत याकूब, हज़रत मूसा और हज़रत ईसा (अलै0) इत्यादि के जीवन के कुछ पहलुओं के अतिरिक्त और आवश्यक भाग इतिहास से गुम हो गये हैं और उनके बारे में जो जानकारियां पायी जाती हैं वो केवल उतनी ही हैं जितनी कुरआन में बयान की गयी हैं, बस। हालांकि ये लोग अपने दौर में सम्पूर्ण नमूना थे लेकिन स्थायी न थे। इसीलिये कुरान मजीद ने उनके जीवन के वही हालात प्रस्तुत किये हैं जिनका संबंध मुहम्मद (स0अ0) की उम्मत की हिदायत से है।

इसके विपरीत आंहज़रत (स0अ0) की पाक ज़ात इतिहास के पन्नों में न केवल सुरक्षित है बल्कि इतिहास का एक प्रकाशमय और मूल्यवान विषय है जिस पर पूरी मानवता को गर्व है। इसकी गवाही उन ग़ैरों ने भी दी है जिनका सारा जीवन इस्लाम की दुश्मनी में बीता है। ये वो सच्चाइयां हैं जिनको कोई चाह कर भी नहीं झुठला सकता। चौदह सौ साल से लगातार आप (स0अ0) का तज़किरह हो रहा है, इतिहास में कोई ऐसा दौर नहीं गुज़रा जबकि आप (स0अ0) की ज़ात को लेखकों ने विषय न बनाया हो। और शायद ही कोई ऐसी भाषा हो जिसमें आप (स0अ0) के जीवन की अमिट छाप न मिलती हो।

सम्पूर्णता: अनुसरण योग्य जीवनी का दूसरा और महत्वपूर्ण कारण सम्पूर्णता है। यानि ये आवश्यक है कि अनुसरण योग्य व्यक्ति के जीवन के सभी हिस्से प्रकाशित हों, ताकि मालूम हो सके कि उसका जीवन कहां तक मानवीय मार्गदर्शन की योग्यता रखता है।

आज बुद्ध धर्म के मानने वाले दुनिया के एक बड़े हिस्से पर स्थापित हैं। मगर ऐतिहासिक रूप से गौतम बुद्ध का जीवन केवल कुछ क़िस्सों और कहानियों पर आधारित है। अगर उन्हे इतिहास का दर्जा देकर उनके जीवन के कुछ आवश्यक पहलू खोजें तो केवल असफलता ही हाथ लगेगी।

यही हाल ज़रतिश्त का है। लेखकों ने यहां तक लिखा है कि हम उसके पैदा होने की जगह से पूरी तरह वाक़िफ़ नहीं हैं और न उसके ज़माने से संबंधित जानकारियां मौजूद हैं।

पुराने नबियों में सबसे मशहूर ज़िन्दगी हज़रत मूसा (अलै0) की है। वर्तमान तौरेत को विश्वस्नीय मान भी लिया जाए तो उनके मानने वाले इससे तो इनकार नहीं कर सकते कि ये हज़रत मूसा (अलै0) की लिखावट नहीं है। दुनिया हज़रत मूसा (अलै0) की जीवनी से बिल्कुल

अनभिज्ञ है। यद्यपि तौरते के हवाले से हमें पता चलता है कि हज़रत मूसा (अलै0) ने एक सौ बीस साल की उम्र पायी। लेकिन तौरेत की पांचों किताबों में उनके जीवन के ज़रूरी हिस्से मौजूद नहीं हैं। उनमें जो कुछ मौजूद है उसका संबंध हज़रत मूसा (अलै0) की पैदाइश, जवानी में हिजरत, शादी, नबूवत और फिर कुछ लड़ाइयों की बातों के अतिरिक्त कुछ नहीं।

इस्लाम से सबसे क़रीबी ज़माने के पैग़म्बर हज़रत ईसा (अलै0) के पैरोकार आप यूरोपियन जनगणना के अनुसार सबसे अधिक हैं। मगर इस पैग़म्बर के ज़िन्दगी के हालात दूसरे धर्मों के संस्थापकों के हालात के मुक़ाबले सबसे कम मालूम हैं। इन्जील के अनुसार आपका जीवन तेतीस बरस का था। वर्तमान इन्जीलियों की रिवायतें अव्वल तो विश्वस्नीय नहीं हैं, और अगर उनको सही मान भी लिया जाए तो इसमें भी आपके जीवन के केवल कुछ ही अध्याय हैं। आप पैदा हुए, फिर मिस्र लाये गये, लड़कपन में एक दो चमत्कार दिखाए, इसके बाद आप ग़ायब हो जाते हैं, और फिर अचानक तीस बरस की उम्र में बपित्समा देते। पहाड़ों और नदियों के किनारे मछवारों को बयान करते और यहूदियों से मुनाज़रा करते हुए दिखाई देते हैं। यहूदी उन्हे पकड़वाते हैं और लोक अदालत उन्हे सूली दे देती है। तीसरे दिन उनकी क़ब्र उनकी लाश से ख़ाली दिखाई देती है, तीस साल या कम से कम पच्चीस साल का ज़माना कहां गुज़रा और कैसे गुज़रा?इससे दुनिया अनभिज्ञ है और रहेगी.....!

लेकिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0अ0) की ज़िन्दगी का हर–हर पहलू सुरक्षित है, आप (स0अ0) की पैदाइश से लेकर आप (स0अ0) की वफ़ात तक उसके बाद के भी हालात इतिहास के सीने में सुरक्षित हैं। बल्कि हर उस व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण व आवश्यक भाग भी इतिहास का हिस्सा हैं जिनका आप (स0अ0) से संबंध व रिश्ता रहा।

व्यापकता: किसी सीरत के अमली नमूना बनने के लिये व्यापकता की शर्त है। इसका उद्देश्य ये है कि विभिन्न इन्सानी वर्ग या एक व्यक्ति को अपनी हिदायत और फ़र्ज़ की अदायगी के लिये जिन उदाहरणों और नमूनों की आवश्यकता होती है वो सब इस "मिसाली सीरत" में मौजूद हैं। अल्लाह और बन्दा और फिर बन्दो के बीच अधिकारों व कर्तव्यों और वाजिब चीज़ों की व्याख्या और उन्हे बखूबी अदा करने का नाम "मज़हब" है। अब हर धर्म के मानने वालों पर फ़र्ज़ है कि वो उन अधिकारों व कर्तव्यों की अपने–अपने संस्थापकों या दावत देने वालों की सीरत में तलाश करें।

बुद्धमत और जैनमत के मानने वालों के बारे में कहा जाता है कि ये खुदा को ही नही मानते। तो इनके संस्थापको के जीवन में अल्लाह की मुहब्बत और तौहीद परस्ती इत्यादि की खोज बेकार है। यद्यपि जिन धर्मों ने खुदा को किसी न किसी प्रकार से स्वीकार किया है उनके संस्थापकों के जीवनों में भी खुदातलबी के किस्से मौजूद नहीं हैं या बहुत कम ही हैं। तौरेत की पांचों किताबें ये नहीं बताती कि हज़रत मूसा (अलै0) कि दिली संबंध, अताअत व इबादत और अल्लाह की सम्पूर्ण विशेषताओं का प्रभाव उनके पाक दिल में कहां तक थी। हुकूकुल्लाह की अदायगी में वो किस प्रकार डूबे हुए थे और बन्दों के अधिकारों के मामलों में उनकी क्या हिदायतें हैं?इसी प्रकार इन्जील हज़रत ईसा (अलै0) की ज़िन्दगी का आइना है। लेकिन इन्जील की शिक्षाओं का निचोड़ केवल यही है कि हज़रत ईसा (अलै0) अल्लाह के बेटे थे, लेकिन ये भी स्पष्ट नहीं हैं कि इस दुनिया के जीवन में बाप और बेटे के संबंध कैसे थे।

इन्सान को सामाजिक जीवन में अमली नमूने के लिये जिन चीज़ों की आवश्यकता होती है उनमें अख़लाक़ व आदतें, जिन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा, समाज में रहने का तरीक़ा, अल्लाह के हक़ और बन्दों के हक़ इत्यादि बुनियादी चीज़ें हैं और यही बुनियादी चीज़ें हज़रत मूसा और हज़रत ईसा (अलै0) की जीवनी में से गुम हैं।

अब बन्दों के हक़ को लीजिए, गौतम बुद्ध अपने परिवार, दोस्तों, शासन व हुकूमत को छोड़कर जंगल चले गये, लेकिन उनके जीवन का ये अहम पहलू उनके मानने वालों के लिये अनुसरण योग्य नहीं बन सका, अन्यथा चीन, जापान, तिब्बत, बर्मा इत्यादि में कारख़ाने और व्यापारिक व्यस्तताएं तुरन्त बन्द हो जातीं और बजाए आबाद शहरों के केवल सुनसान जंगल रह जाते। हज़रत मूसा (अलै0) के जीवन में जंग व सिपहसालारी का पहलू नुमायां है, इसके अतिरिक्त उनकी पैरवी करने वालों के लिये दुनिया के जीवन में अधिकार व कर्तव्य की अदायगी का कोई अनुसरण योग्य नमूना नहीं है। हज़रत ईसा (अलै0) की मां थीं, और इन्जील के अनुसार आपके भाई–बहन बल्कि मादरी बाप भी थे, मगर आपकी सीरत में उन रिश्तेदारों के

साथ आपके तर्ज़अमल और सुलूक के नमूने नहीं हैं जबकि दुनिया हमेशा उन्हीं संबंधों से आबाद रही है और रहेगी। इन्जील के अनुसार उन्होने प्रजा का जीवन व्यतीत किया था इसलिये उनकी जीवनी शासकीय नमूने से ख़ाली है।

हमारा विश्वास है कि हज़रत मूसा और हज़रत ईसा (अलै0) की सीरत और उनकी पैग़म्बराना ज़िन्दगी हर तरह से पाक है। वो अल्लाह के मक़बलू व महबूब बन्दे थे, और अपने–अपने समय के यही अनुसरण योग्य नमूने थे मगर आज उनकी जीवनी की किताबें उनके जीवन के अहम व आवश्यक अध्यायों से ख़ाली हैं।

व्यवहारिकता: "आइडियल लाइफ़" के लिये आख़िरी स्तर व्यवहारिकता का है। यानि धर्मों के बानी व दाओ जो शिक्षा देते हैं उनको खुद उन्होने पूरी ज़िन्दगी में बरता है या नहीं?क्योंकि इन्सान की जीवनी के सम्पूर्ण व अनुसरण योग्य होने की दलील उसकी नेक बातें व दृष्टिकोण नहीं बल्कि उनके आमाल व कारनामें होते हैं।

इसलिये जिसने अपने दुश्मन पर क़ाबू न पाया वो माफ़ करने की अमली मिसाल कैसे पेश कर सकता है?जिसके पास कुछ न हो वो ग़रीबों की मदद कैसे कर सकता है?जो बीवी बच्चे, अहबाब व रिश्तेदार न रखता हो वो उन्ही संबंधों से आबाद दुनिया के लिये अनुसरण योग्य कैसे बन सकता है?जिसे दूसरों को माफ़ करने का मौक़ा न मिला हो, वो गुस्से वाले लोगों के लिये नमूना कैसे बन सकता है?जिनके क़दमों में हुकूमत न हो वो शासकों का मार्गदर्शन कैसे कर सकता है?जिसको कष्ट न पहुंचा हो वो सब्र का नमूना कैसे बन सकता है?

इस स्तर पर भी सीरत मुहम्मद (स0अ0) के सिवा कोई सीरत नहीं उतर सकती। इसका ये मतलब बिल्कुल नहीं कि दूसरे अम्बिया कराम की सीरतें उन विशेषताओं से ख़ाली थीं, बल्कि उनकी जो आम इन्सानों तक पहुंची वो इन विशेषताओं से ख़ालीं थीं, और ऐसा होना अल्लाह की मसलिहत के अनुसार था कि ये साबित हो सके कि वो अम्बिया सीमित युग और निश्चित क़ौमों के लिये थे। इसलिये उनकी सीरतों को आगे के युगों के लिये सुरक्षित रखना आवश्यक न था। केवल हज़रत मुहम्मद (स0अ0) सभी क़ौमों के लिये स्थायी नमूना बनाकर भेजे गये हैं, आप (स0अ0) की सीरत को हर तरह से सम्पूर्ण और हमेशा के लिये सुरक्षित रहने की आवश्यकता थी, और यही "ख़त्म–ए–नबूवत" की सबसे बड़ी दलील है।

शेष : आप वोट किसको दें.....

अक़्लमंदी, भलाई समय की मांग और ज़माने के परिवर्तनों का चिन्तन करने के बाद यही समूह सत्यता के अधिक निकट प्रतीत होता है। और इसके तर्क निम्नलिखित हैं –

(अ) :– इस्लामी हुकूमत की स्थापना इस समय संभव नही

(ब) :– दुनिया के हालात कुछ ऐसे हैं कि मुस्लिम देशों की ओर एक साथ हिजरत (यात्रा) करना सम्भव नही

(स) :– राजनीति से पूरी तरह दूर रहना इस्लाम दुश्मनों को स्थिर कर देगा और ऐसी स्थिति में धर्म प्रचार और शिक्षा के प्रयास का जारी रखना भी असम्भव होगा।

(द) :– हज़रत यूसुफ अलै0 ने मिस्र के राजकोषों की संरक्षता स्वीकार करने का प्रस्ताव रखा था और उसे स्वीकार भी किया था जबकि वहां का मुख्य शासन मुशरिकों के ही पास था।

अतः चुनावी कार्यों में हिस्सा लेना, वोट देना, उम्मीदवार बनना जाएज़ है। परन्तु इसका ध्यान रखा जाए कि वोट देना एक प्रकार की गवाही है कि यह आदमी मेरे मतानुसार उम्मीदवारी के लिए अधिक योग्य है इसलिए वोट देने से पहले भलीभांति जांच कर ली जाए कि हम जिसको वोट देने जा रहे हैं उसके अन्दर उम्मीदवारी की योग्यता के साथ साथ ईमानदारी भी पायी जा रही हो। वह दूसरों की तुलना में मुसलमानों के लिए अधिक लाभदायक हो। इसके लिए आवश्यक होगा कि रिश्ते नातों, सम्बन्धियों, मित्रों, जाति ब्रादरी और निजी हितों को छोड़ दिया जाए वरना वह झूठी गवाही देने वाला होगा जिसको हदीस में सबसे बड़ा गुनाह कहा गया है। और इसकी गिनती भी शिर्क के साथ की गई है।

उम्मीदवार बनने के लिए शर्त यह है कि वह रक्षा करने वाला जानने वाला हो। उसे अपने ऊपर पूरा विश्वास हो कि वह अपने दायित्वों को पूरा करने में समर्थ है। क़ौम की रक्षा कर सकता हो और अमानतदार हो।

चुनावी मुहिम चलाते समय ध्यान रखा जाए कि कोई भी घटना के विपरीत बात न की जाए न ही अनुचित आरोप लगाए जांए, न ही झूठी प्रशंसा की जाए। इस प्रकार की शर्तों के साथ चुनावी मुहिम में हिस्सा लेना इन्शाअल्लाह न केवल जाएज़ बल्कि पसन्दीदा और कभी कभी इससे भी बढ़कर होगा।

दारे अरफ़ात की दो ज़िम्मेदार शख़्सियतें का हादसा-ए-वफ़ात

मुहर्रम के महीने में दारे अरफ़ात को दो अहम हादसे से दो चार होना पड़ा। पहला हादसा डायरेक्टर दारे अरफ़ात मौलाना सैय्यद अहमद अली हसनी नदवी की वफ़ात का पेश आया। दूसरे दिन दायरे शाह अल्लमुल्लाह के ख़ानदानी क़ब्रिस्तान में तदफ़ीन हुई। नमाज़े जनाज़ा हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने पढ़ाई। मौलाना लगभग 25 सालों से दारे अरफ़ात की ज़िम्मेदारी संभाल रहे थे। वो दारुल उलूम नदवतुल उलमा के क़दीम फ़ुज़ला में थे। उनके साथियों में मौलाना डाक्टर तक़ीउद्दीन नदवी और मौलाना डाक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं। मौलाना हज़रत सैय्यद अहमद शहीद के भांजे मौलाना सैय्यद अहमद अली साहब की औलाद में थे और इनकी वालिदा हज़रत ख़्वाजा अहमद साहब नसीराबाद की पोती थीं।

दारुल उलूम से फ़राग़त के कुछ अर्से के बाद ही से वो सरकारी नौकरी करने लगे। एक मुद्दत गुज़ारने के बाद वो कुवैत चले गये। फिर वहां ईराक़ के हमले के बाद वो वापस हुए और दारे अरफ़ात से जुड़ गये, इसकी इन्तिज़ामी ज़िम्मेदारी उनके हवाले की गयी जो उन्होने बखूबी अन्जाम दी।

दारे अरफ़ात से जुड़ने के बाद से उन्होने अलग–अलग इल्मी व अदबी सफ़र भी किये और ख़ास तौर पर राब्ते अदब के जलसों में शरीक हुए, और मक़ालात पेश किये। अगरचे उन्होने अर्से दराज़ के बाद क़लम संभाला मगर उनकी तहरीरे बड़ी बरजस्ता और शगुफ़्ता होती थीं। हिन्दी में अनुवाद की भी उनको महारत हासिल थी। हज़रत की किताब "क़ससुन नबीयीन" का तर्जुमा उनका बहुत विख्यात है। नदवतुल उलमा की हिन्दी मैग्ज़ीन सच्चा राही में वो लगातार अनुवाद करते रहे। आख़िर में उनकी सबसे बड़ी यादगार उनका कुरान का हिन्दी तर्जुमा है। जिन्दगी के आख़िरी सालों में वो इस बाबरकत काम में व्यस्त रहे। दो साल पहले मस्जिद से निकलते हुए गिर पड़े थे। गिरने से फ्रैक्चर हो गया था। उसके बाद से माजूरी रही। मगर जब तक मुमकिन हो सका दारे अरफ़ात जाते रहे। पन्दरह–बीस दिन बिस्तर पर रहे और 12 दिसम्बर 2011 ई0 को मग़रिब के क़रीब जान जाने आफ़रीं के सुपुर्द कर दी।

दूसरा बड़ा हादसा दारे अरफ़ात के ख़ज़ान्ची सैय्यद मुहम्मद मुस्लिम हसनी का पेश आया। जो इस समय ख़ानवादे अलमुल्लाही के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति थे। उन्होने हिजरी एतबार से मुकम्मल सौ साल की उम्र पायी और सारी ज़िन्दगी अपनी मालिक की इताअत में बसर की। आख़िरी कुछ साल तो ऐसे गुज़रे कि वो लगातार आख़िरत की फ़िक्र में रहते और उसी की तैयारी में हर लम्हा गुज़ारते। जवानी के दिनों ही से उनको अपनी इस्लाह की फ़िक्र थी। उसी ज़माने में शेखुल इस्लाम हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी से बैयत की और हज़रत की ख़िदमत में रमज़ान टांडा में गुज़ारा और ज़िन्दगी भर ज़िक्र व शुग्ल के पाबन्द रहे।

मुफ़किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी से उनका गहरा संबंध था वो हज़रत मौलाना के बचपन के दोस्त भी थे और रिश्ते में मौलाना की ख़ालाज़ात बहन के बेटे और हक़ीक़ी भतीजी के शौहर थे।

उनकी ज़िन्दगी काबिले रश्क थी। वो आलिम नहीं थें। मगर उनका दीनी मुताला उलमा के इल्म पर भारी था। वो शेखे तरीक़त नहीं थे लेकिन उनकी ज़िक्र व शुग्ल की ज़िन्दगी और आख़िरत की फ़िक्र मशाएखे तरीक़त की याद दिलाती थी। उनकी शब बेदारी और तज़र्रो वज़ारी दूसरो के लिये नमूना थी। इन्तिक़ाल से दो हफ़्ते पहले तक वो अपने सारे काम ख़ुद अन्जाम देते थे। किसी से ख़िदमत लेना उनको बहुत नागवार गुज़रता था। आख़ीर के पन्द्रह दिन माजूरी के गुज़ारे मगर इसमें भी नमाज़ों के एहतिमाम का हाल ये था कि ज़बान बन्द थी मगर हाथ तय्यमुम की मिट्टी तलाश करते थे। और वो दे दी जाती तो अपने तौर पर तयम्मुम करके नमाज़ की नियत बंध जाती। दिन में कितनी बार यही हालत पेश आती।

अल्लाह ने उनको दीन व दुनिया की सलाहियतों से नवाज़ा था। वो हक़ीक़ी मानों में इस हदीस के मिस्दाक़ थे, (अनुवादः तुममे बेहतर वो है जिसकी उम्र लम्बी हो और अमल अच्छे हों)

अपने पीछे उन्होने दो बेटों सैयद हसन हसनी और डाक्टर सैयद अहमद हसनी और एक बेटी और पोतो को यादगार छोड़ा और अपनी ज़िन्दगी में ही एक बेटे, एक बेटी, दामाद और बहू को सुपुर्दे ख़ाक किया, और राज़ी व साबिर रहे। अल्लाह तआला उनकी मग़फ़िरत करे और उनके दरजात बढ़ाए।

इस्लामी अख़लाक

कुरआन व सुन्नत की रोशनी में

दरगुज़र

दरगुज़र अल्लाह तआला की बहुत बड़ी विशेषता है। अगर दुनिया में दरगुज़र छोड़ दिया जाए तो फिर ये भरी पूरी दुनिया दो दिन में वीराने में बदल जाएगी। कुरआन मजीद में है: (अनुवाद: वही है जो अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है) और कुरआन मजीद की ये आयत बताती है कि जो लोग अपने भाइयों की ग़लतियों और कुसूरों को माफ़ करते हैं तो अल्लाह तआला भी ऐसे लोगों को माफ़ करता है।

(अनुवाद: और चाहिये कि वो माफ़ कर दें और दरगुज़र करें क्या तुम नहीं चाहते कि खुदा तुमको माफ़ करे और अल्लाह तआला माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है)

और दूसरी जगह ईमान वालो की ये खूबी बयान की गयी है कि (और जब गुस्सा आये तो वो माफ़ करते हैं)

दूसरी जगह है:

(जबकि जो सब्र करते हैं और दूसरों की ग़लतियों को बख़्श देते हैं तो बेशक ये बड़ी हिम्मत का काम है)

और अल्लाह के नबी स०अ० का इरशाद है:

(और अल्लाह उस शख़्स की इज्ज़त ही बढ़ाता है जो दरगुज़र करता है)

और दरगुज़र के माने भी यही हैं कि बदला लेने की ताक़त के बावजूद किसी ख़राब, बुरी लगने वाली बात को बर्दाश्त कर लिया जाए। रसूलुल्लाह स०अ० ने इरशाद फ़रमाया कि पहलवान वो नहीं है जो लोगों को कुश्ती में पछाड़े बल्कि पहलवान वो है जो गुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू रखे।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह (स०अ०) की ख़िदमत में एक शख़्स आया और उसने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल मेरे कुछ रिश्तेदार हैं उनके साथ मिलता हूं वो काटते हैं, मैं भलाई करता हूं, वो बुराई करते हैं, वो मेरे साथ जिहालत करते हैं, मैं सब्र से काम लेता हूं आंहज़रत (स०अ०) ने ये सुनकर फ़रमाया, "अगर ये ऐसा ही है जैसा तुम कहते हो तो उनके मुंह में गर्म राख भरते हो और जब तक इस हालत पर क़ायम रहोगे खुदा की तरफ़ से तुम्हारी मदद होती रहेगी।"

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly **Arafat Kiran** Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME 4 | JANUARY 2012 | ISSUE 01

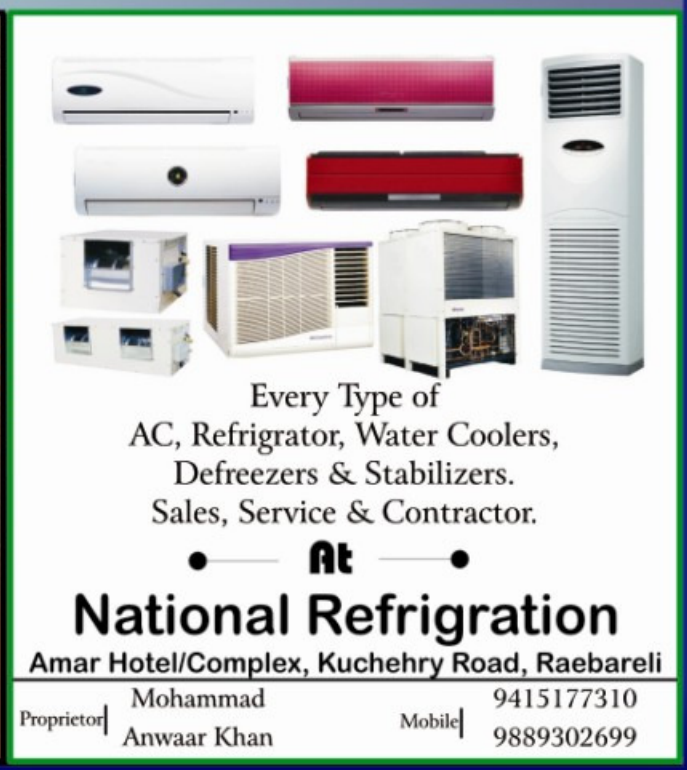

Designed by Mohammad Makky Hasani Nadwi

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile: 9918385097, 9918818558
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.